नागपुत्र

मई, 1980
वर्ष 15 ❋ अंक 12
मूल्य 1.75

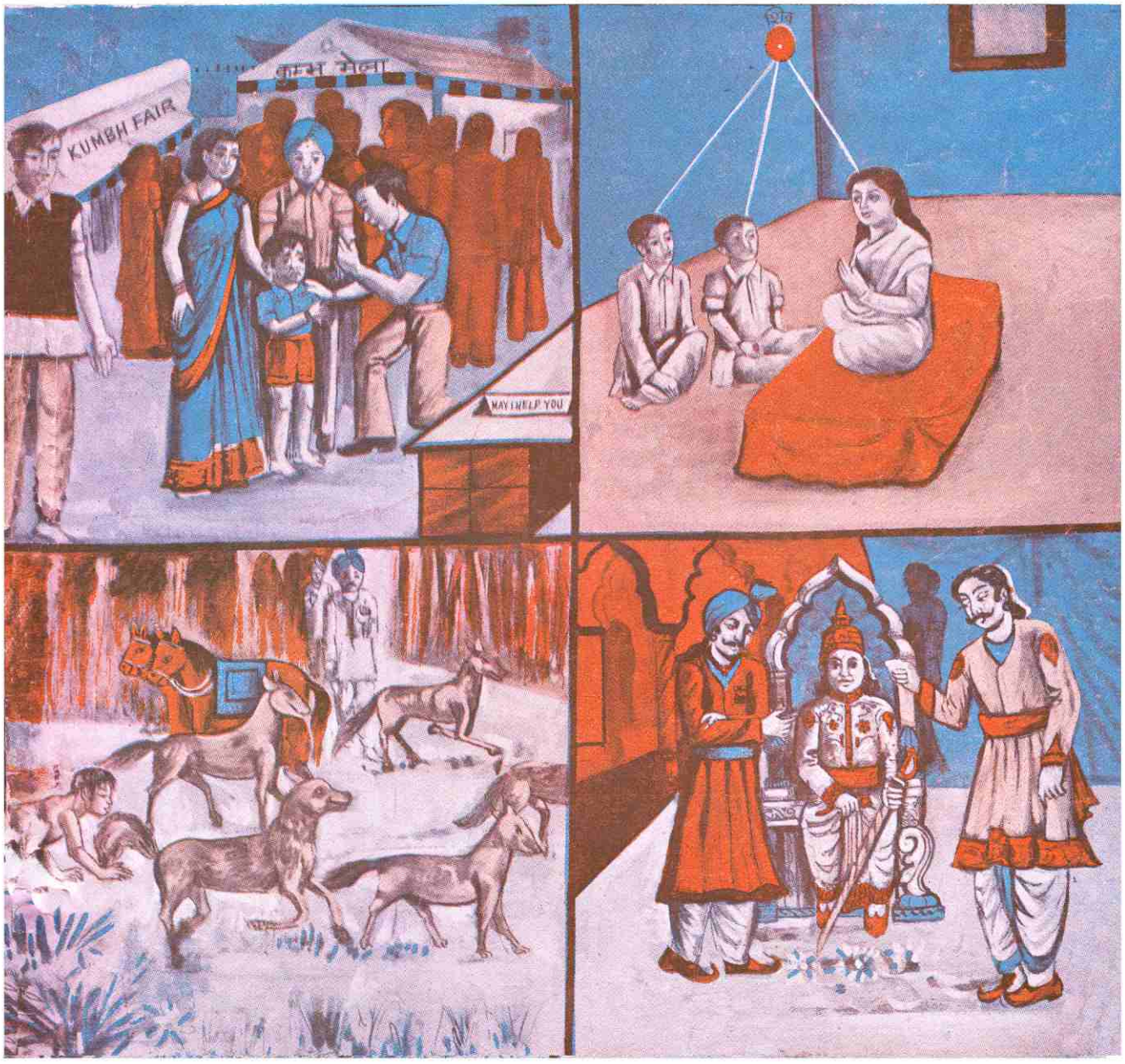

यह चित्र भोपाल में आयोजित "चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेला" के अवसर का है। मंच पर बायीं ओर से ब्र० कु० मोहन ब्र० कु० जगदीश चन्द्र ब्र० कु० विमला, मध्य प्रदेश के पोस्ट मास्टर जनरल की धर्मपत्नी सुशीला चौरसिया तथा आदरणीया दादी प्रकाशमणीजी बैठे हैं।

ऊपर के चित्र में ब्र० कु० कृष्णा वाराणसी में नोबल प्राईज विजेता एवं समाज सेविका भारत रत्न मदर टेरेसा को ईश्वरीय ज्ञान सुनाने के बाद परमात्मा शिव का चित्र भेंट कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० गीता खड़ी हैं।

ऊपर का चित्र तिरुपति में आयोजित आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन के अवसर का है। मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी प्रवचन कररही हैं। मंच पर अधिशासी अभियन्ता भ्राता प्रसाद तथा आन्ध्र प्रदेश के मंत्री भ्राता भास्कर राव बैठे हैं।

नीचे का चित्र उज्जैन में कुम्भ (सिंहस्थ) के अवसर पर आयोजित "नव-विश्व आध्यात्मिक मेला' के उद्घाटन के अवसर का है। मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ध्वजारोहण कर रही है। साथ में मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष भ्राता सुन्दरम, प्रसिद्ध गीतकार भरत व्यास, उज्जैन नगर-निगम के महापौर भ्राता राधेश्याम उपाध्याय, ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी ओमप्रकाश जी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

उपर का चित्र कर्नाटक के चीफ मिनिस्टर भ्रात गुन्डुराव तिरुपति के संग्रहालय को देखने के पश्चात् वहां के बहन-भाईयों के साथ खड़े हैं।

से वा

स मा चा र

चि त्रों

में

अमृत-सूची

१.	अपने आप की और बाप के परिचय की विस्मृति (मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित)	१	
२.	एक नई क्रान्ति जो लायेगी विश्व-शान्ति (सम्पादकीय)	२	
३.	भटकती आत्मा	६	
४.	"शिव का परिचय प्यारा-२ है" (कविता)	११	
५.	पतंजली योग और राजयोग	१२	
६.	मेरे क्या कहने ? (कविता)	१५	
७.	मौन पुकार···! (कविता)	१५	
८.	चुप रहने में सुख	१६	
९.	"अपने से पूछो"	१८	
१०.	सेवा समाचार (चित्रों में)	१९	
११.	रोज सवेरे चल पड़ता हूँ साथ तेरे (गीत)	२३	
१२.	तुम जलो दीप की भांति हरो जग का ये अंधकार (कविता)	२३	
१३.	सतयुग तथा कर-व्यवस्था	२४	
१४.	स्वधर्म की पहचान (ड्रामा)	२८	
१५.	दस सूत्री कार्य-क्रम की सफलता से ही विश्व-कल्याणकारी महायज्ञ की सफलता	३१	
१६.	ग़ज़ल	३३	
१७.	दृढ़ निश्चय	३४	
१८.	आदर्श जीवन बिताना (कविता)	३५	
१९.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३६	
२०.	मेरे खुदा-शिव बाबा	४०	

मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

अपने आप की और बाप के परिचय की विस्मृति

लेखक ब्रह्माकुमार उमेश, कृष्ण नगर, देहली

हरिद्वार में कुम्भ के मेले के अवसर पर एक विशाल जन-समूह में एक छोटा बच्चा अपने माता-पिता से बिछुड़ गया। बेचारा रोता-चिल्लाता इधर-उधर भटक रहा था कि इतने में एक नारी उसे सेवा-समिति के कार्यालय में ले गयी। वहाँ उससे कार्य-कर्त्ता ने पूछा—"बच्चे, रोओ मत ! अपने पिता का नाम और पता बताओ तो हम तुम्हें उनको मिला देंगे। परन्तु बच्चे को न अपने आप का पता था न न बाप का। अर्थात, वह न तो अपना नाम-धाम जानता था न ही उसे अपने पिता का नाम-धाम, कार्य-व्यापार मालूम था। यही उसके रुदन का और अशान्ति का कारण था। उसे बहुत खिलौने दिये गये, पदार्थ भेंट किये गये, परन्तु उसके मन के भीतर माता-पिता से खोजाने की एक पीड़ा थी। यही हालत आज मनुष्यात्मा की है जो कि अपने पिता परमात्मा से बिछुड़ कर अशान्त है।

दूसरा एक प्रसिद्ध किस्सा एक राजपुत्र का है जिसे महल से बाहर खेलते समय भेड़िये उठा कर ले गये थे। बच्चा उन भेड़ियों के संग रहते-रहते उन्हीं की-सी आदतों वाला हो गया, वह उन्हीं की तरह चलता-भागता, चीत्कार करता और मांस भक्षण करता। वह यह भूल गया था कि मैं तो राज-कुमार हूँ और मेरा रहन-सहन तो एक कुलीन बालक के जैसा होना चाहिए। आखिर एक दिन राजा के बहादुर कार्य-कर्त्ताओं ने उसे भेड़ियों के चंगुल से छुड़ाया और उसे महल में लाये। वहाँ उसे यह शिक्षा दी जाने लगी कि "तुम तो राजकुमार हो" इससे उसके जीवन में परिवर्तन आया और वह राज-कुमार की न्यायी राजकुलोचित रीति से रहने लगा।

इसी प्रकार, मनुष्यात्मा स्वयं को भूल इस संसार रूपी वन में काम, क्रोधादि के वातावरण में तदानुरूप हो हो गयी है। अब इसे अपने आप की और अपने बाप (परमपिता परमात्मा) का परिचय दे कर ब्रह्माकुमारी बहनें आत्मा को परमात्मा से योग-युक्त कर रही हैं जिससे उनका संस्कार पवित्र्तन भी होगा और उनके जीवन में शान्ति भी प्राप्त होगी।

एक नई क्रान्ति जो लाएगी विश्व-शान्ति

आज सारे विश्व में एक अभूतपूर्व तनाव का वातावरण है। अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र को बढ़ाने के लिए शक्तिशाली देशों में परस्पर एक ख़तरनाक होड़-सी लगी हुई है। अजीब बात है कि जब विश्व की आधी से अधिक जन-संख्या रोटी-रोज़गार की समस्या से और रोगों से पीड़ित है, तब विश्व का खरबों रुपया, लाखों वैज्ञानिकों का मस्तिष्क-बल तथा करोड़ों मनुष्यों का बाहु-बल मानवता की निर्मम हत्या करने में काम आने वाले अस्त्रों-शस्त्रों को बनाने और अपनाने में लगा हुआ है। विपुल मात्रा में ऊर्जा का, अल्प-प्राप्य धातुओं का और खनिज पदार्थों का, हज़ारों बड़े कारख़ानों का और बड़े पैमाने पर आधुनिक तकनीकी का प्रयोग विनाशकारी उपकरण बनाने में ही हो रहा है। छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर देश एक-दूसरे को सैन्य बल के प्रयोग की धमकियाँ देते हैं और दुश्मनी की बात करते हैं। आज भूमण्डल पर कुछ इने-गिने ही ऐसे देश होंगे जिनके पड़ौसी देशों से भी अच्छे सम्बन्ध हों, जो पूर्णतः गुट-निरपेक्ष भी हों और जो किसी भी देश की राजनीतिक चालों से थोड़े-बहुत भी चिन्तित या भयभीत न हों। और तो क्या, एक ही अर्थ-नीति (Economic system) शासन-प्रणाली (Form of Govt.) या धर्म को मानने वाले देशों में भी परस्पर वैर-विरोध है। कोई एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रता जब सारे विश्व में शान्ति हो। कुल स्थिति ऐसी है कि यदि किसी एक भी बड़े देश के शासन का मस्तिष्क किसी विचार को लेकर उत्तेजित हो उठे तो कुछ ही मिनटों में सारी सभ्यता ध्वस्त हो सकती है। अतः आज हर पत्र-पत्रिका में और हर मँच से यह कहा जाता है कि राष्ट्रों के नेताओं को चाहिये कि वे शान्ति, सहनशीलता, धैर्य, सद्भावना, प्रेम और सूझ से काम लें वरना विज्ञान, औद्योगीकरण और तकनीकी ने पिछले कई सौ वर्षों में जिन विपुल भौतिक सुख-साधनों का निर्माण किया है वे कुछ ही मिनटों में काल के गराल हो सकते हैं।

इधर हम अपने देश में देखते हैं कि विश्व-विद्यालयों में, कारख़ानों में, हस्पतालों में, बैंकों में, किसी एक या दूसरे कार्य-स्थान पर हड़ताल या नारे-बाज़ी का वातावरण दिखाई देता है। जगह-जगह अलगाव की प्रवृत्ति (secessionist tendencies) काम कर रही है और बग़ावत का झण्डा बुलन्द हो रहा है। जाति-पाति को लेकर कई जगह अत्याचार होता है और दल-बल को सामने रख कर कई बार राष्ट्र-हित को बलि चढ़ाया जाता है। संगठन बन रहे हैं जो अपनी मांगें मनवाने के लिए दूसरों के हितों की रंच भी परवाह नहीं करते। हिंसात्मक एवं द्वेषात्मक वृत्ति के कारण जगह-जगह देश की सम्पत्ति नष्ट हो रही है और इन सभी के परिणामस्वरूप उत्पादन के कार्य को करोड़ों रुपयों की क्षति पहुँच रही है। अतः हर नर-नारी की ज़ुबान पर कुछ इस प्रकार की आवाज़ है कि शान्ति से और भ्रातृत्व की भावना से काम लिया जाना चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आज का सबसे बड़ा कार्य, आज की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योजना अथवा सबसे श्रेष्ठ सेवा मनुष्य में सहनशीलता, सन्तोष, धैर्य, नम्रता और भ्रातृत्व की भावना आदि सद्गुणों की स्थापन करना है।

यह भी स्पष्ट है कि अनेक प्रकार के राजनीतिक विधि-विधान, उच्च कोटि के आर्थिक सिद्धान्त, महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार, औद्योगिक एवं तकनीकी ज्ञान तथा श्वेत क्रान्ति (White Revolution) और हरित क्रान्ति (Green Revolution) आदि क्रान्तियाँ समाज की भौतिक समृद्धि तो कर सकती हैं परन्तु समाज में शान्ति की स्थापना की कला इन सभी से भिन्न है। निस्सन्देह, विज्ञान और भौतिक प्रगति आवश्यक हैं परन्तु, सच मानिये, जब तक मनुष्य जीवन कला को नहीं जानता तब तक वह सच्ची शान्ति का एक साँस भी नहीं ले सकता। यही कारण है कि आज प्रायः लोगों के चेहरों पर चिन्ता, आक्रोश, मन-मुटाव आदि ही की

भाव-रेखाएँ दिखाई देती हैं। अतः सभी को यह मानना होगा कि आज मनुष्य के मन को शान्ति देने वाली क्रान्ति की तथा समाज में भ्रातृत्व एवं सद्-भावना की स्थापना करने वाली क्रान्ति की नितान्त आवश्यकता है और यदि कोई इस क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करता है तो वह एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लेता है; एक बहुत ही बड़ी चुनौती स्वीकार करता है और एक महानतम सेवा में स्वयं को जुटाता है।

इस नव-क्रान्ति की पताका किसके हाथ में ?

यह खुशी की बात है कि माताओं-बहनों द्वारा संचालित आध्यात्मिक संगठन जिसे जन-जन 'प्रजा-पिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय' के नाम से जानते हैं, ने इस क्रान्ति की मशाल को अपने हाथ में लिया है। इस संस्था के नियम शाश्वत और सार्व-भौम हैं और इनके पालन में ये लोग बहुत ही दृढ़ हैं। ये अपनी धुन के पक्के, लगन के सच्चे और संकल्प के धनी हैं। इस संगठन में आज लगभग ८०,००० ऐसे लोगों का सहयोग-बल है जो आचार-विचार की मर्यादा को और योगी जीवन के व्रतों को निभाते हैं और स्वयं को सदा विद्यार्थी मानते हुए दिनोंदिन सद्गुणों के विकास में लगे रहते हैं। इन सभी की परमात्मा में अटूट आस्था ही नहीं बल्कि वे इस निश्चय को लिए हुए हैं कि यह कार्य परमपिता परमात्मा स्वयं करा रहे हैं और हम सभी को योग-युक्त होकर तथा स्वयं को निमित्त मानकर इसे करना है।

दस सूत्री कार्यक्रम

इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने आगामी दस मास के लिए एक वस्तु-निष्ठ (realistic) और महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम बनाया है जिसकी क्रियान्विति हो सकती है। इसे 'दस सूत्री कार्यक्रम' अथवा 'विश्व कल्याणार्थ ज्ञान योग महायज्ञ' नाम दिया गया है। इन दस सूत्रों में से प्रथम दो सूत्र और नवाँ सूत्र ऐसे हैं जिनमें एक नव-क्रान्ति अथवा नव जाग्रति के बीज निहित हैं। यहाँ हम पहले इन तीन का विवरण देते हैं :—

सामूहिक एवं समकालिक ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास

सबसे पहले सूत्र में कहा गया है कि हरेक व्यक्ति प्रतिदिन प्रातः ७ बजे १० मिनट के लिए विश्व-कल्याणार्थ विशेष रूप से मन को ईश्वरीय स्मृति में समाहित और एकाग्र करेगा। यों सुनने में यह सूत्र बहुत सामान्य है परन्तु वास्तव में १० मिनट हज़ारों, लाखों, करोड़ों लोगों का एक ही समय पर एक परमात्मा ही के विषय पर मन को शान्त करना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे विश्व में शान्ति के बहुत ही बलशाली प्रकम्पन शान्ति का संचार करेंगे। अन्य सभी बातों को भूलकर, वैर-वैमनस्य से मन को रिक्त करके, स्वार्थ की बातें छोड़ कर, विश्व के कल्याण के लिए मन को एकाग्र करने से मनुष्य में दूसरों की भलाई सोचने का संस्कार परिपक्व होगा। और दस मिनट का योग शान्ति का एक ऐसा स्रोत है कि जब मनुष्य इस अभ्यास से उठेगा तो उसे ऐसा लगेगा कि उसे एक नया जीवन प्राप्त हुआ है, एक नई दिशा मिली है और सच्चे सुख की सहज ही कुंजी उपलब्ध हुई है। उसे लगेगा कि उसके मन का मैल धुल गया है और कि अब से वह वैर-विरोध, कलह-कलेश, क्रूरता और कपट को छोड़ देगा और करुणा तथा सहानुभूति का व्यवहार करेगा। इस दस मिनट के बुद्धियोग द्वारा वह स्वयं में संस्कारों का समूल परिवर्तन अनुभव करेगा, एक नई जागृति को महसूस करेगा तथा वह सबसे प्यार तथा भ्रातृत्व से सद्-व्यवहार करने का एक अपूर्व मनोबल स्वयं में पायेगा। ये भावनायें उद्दीप्त होकर उसकी दिनचर्या को प्रकाशित एवं प्रभावित करेंगी। अतः वह जहाँ जायेगा, एक अलौकिक शान्ति और खुशी की लहरें बखेरेगा।

प्रातः ७ बजे का समय इसलिए रखा गया है कि इस समय तक प्रायः सभी लोग उठकर तथा नहा-धोकर तैयार हो जाते हैं अथवा हो सकते हैं। अतः सारे विश्व के प्राणियों को विचार में रखते हुए, सामूहिक योग के प्रभाव को महत्त्व देते हुए यह समय निश्चित किया गया है। प्रातः ७ बजे १० मिनट सामूहिक योग में बैठने का कार्यक्रम ऐसा है कि जिस पर ख़र्च कुछ भी नहीं होगा परन्तु जिससे संसार में हिंसात्मक एवं विरोधात्मक प्रवृत्तियों पर शान्ति के प्रकम्पनों का प्रभाव पड़ेगा और कई लोग सात्त्विकता का पथ लेंगे और इसके फलस्वरूप, हम ऊपर तनाव के जिस व्यापक वातावरण का उल्लेख कर आये हैं,

उसका भी उपशमन होगा।

इस क्रान्ति के लिए और कुछ नहीं,
मनोविकार दे डालो!

इसी प्रकार १० सूत्री कार्यक्रम के दूसरे और ९वें सूत्रों में दस बुराइयों में से एक-न-एक बुराई को छोड़ने तथा १० दिव्य गुणों में से एक-न-एक को धारण करने के लिए कहा गया है। सरसरी तौर पर पढ़ने से तो यह भी एक साधारण-सा धार्मिक विधि-वाक्य ही मालूम होता है परन्तु वास्तव में ये सभी आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं का हल है। हमारे इस कथन को कोई अतिशयोक्ति न मान ले, इसलिए हम नीचे तनिक स्पष्ट ही कर देते हैं कि किस प्रकार ये सभी विकार केवल मनुष्य के निजी जीवन को दुःखी बनाने वाले नहीं बल्कि ये समाज, राष्ट्र एवं विश्व की सभी समस्याओं के जनक हैं :—

१. काम

आज 'जन-संख्या में तीव्र वृद्धि' विश्व की मुख्यतम समस्याओं में गिनी जाती हैं। एशिया के बहुत-से देश इसी के कारण अपने जीवन के आर्थिक स्तर को ऊँचा नहीं कर पाते हैं। कितने ही देशों में लोगों को न पेट-भर रोटी मिलती है, न मनुष्य की रीति से रहने के लिए स्वच्छ मकान, न कमाने के लिए रोज़गार या धन्धा मिलता है, न पढ़ाई के लिये आवश्यक धन प्राप्त होता है। अतः वे मनुष्यता के स्तर से नीचे की ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे हैं और पटरियों पर सो कर तथा बचा-खुचा खाकर दिन गुज़ार रहे हैं।

इस समस्या का स्वास्थ्यप्रद, स्वाभाविक एवं सदाचारपूर्ण साधन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन अथवा इन्द्रिय-संयम अथवा काम विकार का बहिष्कार ही है। काम विकार के विसर्जन से मनुष्य में एक अपूर्व आध्यात्मिक शक्ति का जाग्रण होता है और एक अदम्य नैतिक बल का अभ्युदय होता है और साथ-साथ उसकी कार्य-क्षमता तथा उसके शारीरिक बल का संवर्धन होता है।

जिन देशों में 'काम' विकार को छोड़ने की बजाय लोग कृत्रिम साधन अपनाते हैं उनमें समलैंगिकता (Homosexuality), स्वच्छन्दता (Permissiveness), अश्लील पत्रिकाओं, नॉवलों, फ़िल्मों आदि की समस्या पैदा हो जाती है और समाज वेश्यावृत्ति तथा नैतिक पतन की ओर बढ़ता है। अतः उस देश के नागरिकों का धन व्यसनों और व्यभिचार पर ही बर्बाद होता है और उनमें पशु-वृत्ति ही को बढ़ावा मिलता है।

पुनश्च, यह निश्चित है कि स्त्रियों से छेड़छाड़, बलात्कार, नारियों का अपहरण, वेश्यागमन, अश्लील गाली-गलौच, साहित्य, कला, मंच और सिनेमा में अश्लीलता, व्यापारिक इश्तिहारों में अर्ध-नग्नता, तलाक या आत्मघात की कई वारदातें, कई प्रकार के रोग आदि इसी 'काम' विकार ही के कारण से होते हैं। अतः यह समझना कठिन नहीं होगा कि इस बुराई को छोड़ने से एक स्वच्छ समाज का निर्माण होगा।

२. क्रोध

क्रोध से तो समाज में इतने अपराध होते हैं, समाज को इतनी आर्थिक क्षति पहुँचती है, मनुष्य को इतने शारीरिक रोग घेर लेते हैं और परिवारों में ऐसे विस्फोट होते हैं कि उन सभी को यहाँ गिनाना सम्भव ही नहीं होगा। क्रोध से अन्तर्राष्ट्रीय और देशीय स्तर पर जो विध्वंसात्मक प्रभाव पड़ते हैं, उनमें से कुछेक का उल्लेख हमने इस लेख के शुरू में किया है परन्तु इसके अभिशाप तो अनगिनत हैं। कत्ल, अग्निकाण्ड, लूट-मार, हिंसात्मक आन्दोलन, प्रतिशोध, निन्दा, अपमान आदि इसी ही के विभिन्न रूप हैं। इस प्रकार के अपराध करने वालों को पकड़ने तथा दण्डित करने के लिए ही कानून बने हुए हैं, पुलिस ऐसे लोगों को पकड़ने में, न्यायालय उनके मुकद्दमें सुनने में तथा जेलख़ाने उन्हें दण्ड देने में लगे रहते हैं। विधि-विधान की शिक्षा के लिए कालेज, उनमें पढ़कर न्यायालयों में कार्य करने वाले विधि-वेत्ता, विधान सभाओं में विधायक प्रायः इसी धुर्री के गिर्द ही कार्य करते हैं। अतः यदि क्रोध, घृणा, द्वेष आदि को छोड़ दिया जाय तो अपना तथा समाज का बहुत भला हो सकता है और एक नये समाज का निर्माण हो सकता है जिसमें शान्ति ही का अखण्ड साम्राज्य होगा और कलह-कलेश का नाम-निशान भी नहीं होगा, न ही आक्रोश-भरे चेहरे या तनाव का वातावरण होगा।

३. लोभ

आज संसार में किसी को धन का लोभ है तो किसी को सत्ता का लोभ। किसी को मान का लोभ है तो किसी को दहेज का लालच। हालत यह है कि करोड़ों रुपयों वाली अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक संस्थायें भी भ्रष्टाचार के रंग में रंगी हैं और 'देश-सेवी' कहलाने वाले व्यक्ति भी इसी की ताल ठोक रहे हैं। सारे व्यापार को भ्रष्टाचार का थोड़ा-बहुत तो घुन लगा ही हुआ है। चीज़ों में मिलावट, चोरबाज़ारी, स्मगलिंग, इन्कम टेक्स की चोरी, सम्पत्ति को कम मूल्य का दिखाने की प्रवृत्ति, सरकारी कर्मचारियों द्वारा नाजायज़ माँग, चोरी, डकैती, ज़खीराख़ोरी, अनुचित मुनाफ़ाखोरी, धोखाधड़ी, यहाँ तक कि जीवन-रक्षा के लिए आवश्यक औषधियों में भी मिलावट लोभ के ऐसे ख़तरनाक रूप हैं कि तोबह ही भली। खाने पीने की आदत में लोभ ही के परिणामस्वरूप मनुष्य कई रोगों का शिकार है। लोभ ही अमानत में ख़यानत और जालसाज़ी तथा मुकद्दमाबाज़ी का एक बहुत बड़ा कारण है। अतः इसको छोड़ने से व्यक्ति एवं समाज का सही कल्याण निश्चित है। लोभ से स्वतंत्रता पाने से ही शोषण-रहित, निर्धनता के अभिशाप से मुक्त एक सदासुखी समाज का निर्माण होगा।

४. मोह

मोह केवल अपने रिश्तेदारों ही के बीच नहीं होता बल्कि किन्हीं दो व्यक्तियों में ज़ातपात, रंग और नसल, देश और भाषा आदि किसी भी प्रकार के सम्बन्ध के आधार पर हो सकता है। मोह से ही पक्षपात और अन्याय, भाई-भतीजावाद, अपने ही लगाव वालों के बचाव के लिए झूठ-फ़रेब और नियमों का उल्लंघन होता है। इसी के कारण मनुष्य दूसरों के साथ अन्याय आदि-आदि अनेक प्रकार के बुरे कर्मों की दलदल में फँसता है। अतः न्याय पर आधारित, एक स्वच्छ, निर्मल एवं सुयोग्य समाज के निर्माण के लिए और स्वयं को पतनकारी बन्धनों से मुक्त करने के लिए मोह की बेड़ियों को काटना ज़रूरी है।

५. अहंकार

अहंकार एक ऐसा विकार है जो अन्य बहुत-से विकारों को पैदा करता है और कुछेक विकारों को सदा सहगामी बनाये रहता है। इससे बहुत ही कलह-क्लेश उत्पन्न होते हैं। दूसरों की निन्दा करने, उन्हें हानि पहुँचाने, उनके कार्य में अवाञ्छित हस्तक्षेप करने, बात-बात में रोब डालने तथा दुर्व्यवहार करने या आत्म-श्लाघा करने की प्रवृत्ति के पीछे मनुष्य का अहं-भाव ही छिपा होता है, यहाँ तक कि तलाक और बलात्कार की कई वारदातों में भी मनुष्य की महत्त्वाकाँक्षा की चेष्टा ही छिपी हुई काम कर रही होती है। क्रोध की अग्नि को जलाने के लिए अहंकार माचिस की तीली का काम करता है। अहंकार और क्रोध ने ही कई परिवारों, राज्यों तथा सभ्यताओं को धूली-धूसरित कर दिया है—इसके लिए इतिहास गवाह है। अतः इससे छुटकारा पाने का पुरुषार्थ करना गोया सच्चे सुख का साधन करना है।

६. मद्यपान

मद्यपान न केवल धन का अपव्यय है बल्कि अनेकानेक बुराइयों को एक-साथ मोल लेना है। यह बोतल की अधीनता को स्वीकार कर जीवन-भर की ग़ुलामी स्वीकार करना है। धन ख़र्च कर के अपने मानसिक सन्तुलन को गँवाना और धीरे-धीरे उन्मत्ता, उत्तेजना या अनियन्त्रण के रास्ते पर आगे बढ़कर क्षणिक उन्माद के लिए आत्मा के शाश्वत सुख को गँवाना है। शराब से कितने घर बर्बाद होते हैं, कितने जीवन नष्ट होते हैं, कितने अपराध होते हैं, इसका उल्लेख लेखनी नहीं कर सकती। इससे मनुष्य के मस्तिष्क, शरीर और संस्कारों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर प्रचुर साहित्य लिखा गया है। अतः इस दुर्व्यसन, आदत, ग़ुलामी या अपव्यय से छुटकारा पाना कल्याण-मार्ग को अपनाना है।

७. धूम्रपान

एक ज़माना था कि इसे उच्च स्तर का प्रतीक या एक ऐसी आदत माना जाता था जिसका शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव नहीं होता परन्तु अब तो इस विषय में काफ़ी शोध-कार्य हो चुका है और यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि इससे मनुष्य कैसे-कैसे रोगों का शिकार होता है। यही कारण है कि आज विश्व के बहुत-से देशों में यह कानून बन चुका है कि सिग्रेट आदि की डिब्बियों पर यह अंकित हुआ होना चाहिए कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। धूम्रपान से होने वाली शारीरिक हानियों के कारण ही 'विश्व स्वास्थ्य

संघ' (W. H. O.) ने भी इस वर्ष तम्बाकूनोशी के ख़तरों के विषय में लोगों को शिक्षा देने सम्बन्धी विशेष कार्यक्रम रचे हैं।

परन्तु हमें यह मालूम होना चाहिये कि शरीर और मन का परस्पर सम्बन्ध है। शरीर को हानि पहुँचाने वाली इस वस्तु का मनुष्य के मस्तिष्क पर भी बुरा ही प्रभाव पड़ता है। अतः पैसा बर्बाद करने वाली इस स्वास्थ्य-हर आदत को नैतिक एवं आध्यात्मिक तौर पर वर्जित माना गया है क्योंकि ये मनुष्य के नैतिक बल को भी धूमिल अथवा कमज़ोर करती हैं। इसलिए इसे छोड़ना ही श्रेष्ठ है।

८. माँसाहार

यही बात मांसाहार के लिए भी कही जा सकती है। इस प्रकार की आहार-प्रणाली दूसरे का हनन करने की प्रवृत्ति पर आधारित होने से मनुष्य को निर्दयी और हिंसा-प्रिय बनाती है तथा स्वार्थपरता की ओर ले जाती है। जो सभी पशु-पक्षियों, नर-नारियों की हित-कामना करना चाहता है, वह भला दूसरों का रक्त बहाकर अपना पेट भरने का साधन कैसे अपना सकता है? अतः यदि हम चाहते हैं कि मानवोचित व्यवहार को अपनायें और संसार से शोषण तथा रक्तपात का अन्त करें तो हमें मांसाहार को छोड़ना ही चाहिये। दूसरों की चीख़-पुकार की परवाह न करके अपने स्वाद का साधन ढूंढ़ना मानवता नहीं है। हमारे समाज के पतन का एक कारण मांसाहार ही है।

सूत्र ९ और १०—अश्लील साहित्य और फ़िल्म

यह तो मानी हुई बात है कि फ़िल्म का मनुष्य के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है और साहित्य भी अपनी स्थायी छाप छोड़ जाता है। अतः यदि इन दोनों में अश्लीलता, हिंसा या घटिया प्रकार के संस्कारों का प्रयोग किया गया हो ताकि लोग इसे अधिक संख्या में देखें तो समझना चाहिये कि ये उस देश के लिए निश्चित रूप से अभिशाप एवं अपशगुन हैं। समाचार पत्रों में कितनी ही बार यह पढ़ने को मिलता है कि अमुक अपराध करने वाले ने कहा कि उसने अपराध करने का यह तरीका अमुक फ़िल्म से सीखा था। अपराध करने की नौबत न भी आती हो तो भी इसका नैतिकता-घातक प्रभाव तो मनुष्य पर पड़ता ही है। अतः इससे बचकर रहने वाला मनुष्य ही अपने चरित्र की रक्षा कर सकता है।

दिव्य गुणों की धारणा

इस लेख के शुरू में ही हम स्पष्ट कर आये हैं कि (१) सहनशीलता, (२) नम्रता, (३) मधुरता, (४) हर्षितमुखता, (५) सन्तोष, (६) समावस्था, (७) धैर्य, (८) सरलता, (९) अन्तर्मुखता, (१०) गुण-ग्राहकता आदि ऐसे दिव्य गुण हैं जिनसे संसार की हालत का सुधार हो सकता है और मनुष्य को सच्ची शान्ति मिल सकती है। अतः १०-सूत्री कार्यक्रम में प्रतिदिन एक-न-एक दिव्य गुण पर विशेष मनन करना तथा उसकी अपने मन-वचन-कर्म में दृढ़ धारणा करना एक बहुत महत्त्वपूर्ण कदम है जिससे मानव-मन में शान्ति की वृद्धि की जा सकती है। इसी को लक्षित करके इस सूत्र को विशेष स्थान दिया गया है। इससे ही इस संसार में अपराध, रोग, वैमनस्य, यहाँ तक कि प्राकृतिक प्रकोप कम होंगे। इनमें से हरेक गुण इतना अनमोल है कि जिसका हिसाब नहीं। एक सहनशीलता के गुण को ही ले लीजिए। यदि किसी देश के नागरिक इसे धारण कर लें तो करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति नष्ट होने से बच जाएगी, कितनी ही मुकद्दमाबाज़ी समाप्त हो जाएगी और मनुष्य-मनुष्य में प्रेम की धारा बह निकलेगी।

इस क्रान्ति या जागृति के निमित्त साधन

इन उपरोक्त सूत्रों को कार्यान्वित करने के लिये व्यक्ति, सेवा केन्द्रों और ज़ोन को माध्यम बनाया गया है। एक सूत्र में कहा गया है कि हरेक व्यक्ति प्रतिदिन किसी-न-किसी से १० मिनट प्रभु-चर्चा करेगा और इन १० मास में १० व्यक्तियों को 'योग शिविर' करने की प्रेरणा देगा। इसी प्रकार केन्द्रों के लिये निश्चित किया गया है कि वे १० मास में १० आध्यात्मिक प्रदर्शनियाँ तथा १० 'योग शिविर' करेंगे और हर ज़ोन १० पुस्तकालयों में ईश्वरीय साहित्य रखेगा ताकि लोग उसे पढ़ कर लाभान्वित हो सकें। इस प्रक्रिया से जन-जन की सेवा भी हो जायेगी, हर व्यक्ति में भी सेवा-भाव का संस्कार परिपक्व होगा और सेवा करने वाले की अपनी भी उन्नति होगी तथा सेवा से उसे आशीर्वाद मिलेगा और स्वार्थपरता मिटेगी। "जने-जने की लकड़ी एक जने का बोझ"—इस उक्ति के अनुसार

एक-एक व्यक्ति जब अल्पतम, निश्चित सेवा में जुट जाएगा तो 'बूंद-बूंद से तालाब भर जायेगा' और जो कार्य असम्भव मालूम होता है वह सम्भव हो जायेगा। ज्ञान, गुण तथा योग का दूसरों को लाभ देने से हमारा अपना भी कल्याण होता है; अतः इन द्वारा मानव-मानव की सेवा करने से निश्चय ही अपनी भी धारणा परिपक्कव होगी और पर-हित कामना भी दृढ़ होगी।

अपंगों कैदियों आदि की सेवा

फिर अपंग, कैदी आदि वर्ग ऐसे हैं जो योग शिविर या प्रदर्शनी तक नहीं पहुँच सकते या इन साधनों से लाभ नहीं ले सकते। अतः उनकी सेवा को भी इस दस सूत्री कार्यक्रम में विशेष स्थान दिया गया है। कैदियों के प्रति भी तो समाज का कुछ कर्त्तव्य है। यदि समाज मानव की आध्यात्मिक शिक्षा पर प्रारंभ ही से ध्यान दे तो शायद अपराध होंगे ही नहीं। परन्तु अब जब किसी-न-किसी बुरे संस्कार-वश या दूषित वातावरण के प्रभाव से मनुष्य ने कोई अपराध कर लिया है तो अब उसके संस्कार को बदलने तथा उसे शान्ति का मार्ग दर्शाने का भी तो कोई पुरुषार्थ होना चाहिए।

हरिजनों की सेवा

फिर हरिजनों पर तो आज हम समाचार पत्रों में अत्याचार तथा दुर्व्यवहार के अनेक समाचार पढ़ते हैं। उनकी आध्यात्मिक सेवा करने के कार्यक्रम बनाने की बात भी इसमें कही गयी है। वास्तव में आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा आत्मा निश्चय (Soul-consciousness) से ही ज़ातपात के भेदभाव मिट सकते हैं और आत्मिक दृष्टि से ही शोषण तथा घृणा का अन्त हो सकता है। "ज़ातपात पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।"

विशेष बात यह कि इस कार्यक्रम में माताओं तथा युवा वर्ग और बच्चों की आध्यात्मिक जागृति पर विशष ध्यान दिया गया है। यह निर्विवाद है कि इनकी आत्मिक चेतना पर ही एक अद्‌भुत समाज की अट्टालिका टिकी है।

१० पैसे का योगदान

१०-सूत्री कार्यक्रम में यह भी कहा गया है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का हरेक विद्यार्थी स्वेच्छा से विश्व-कल्याणार्थ १० पैसे निकालेगा। आज मनुष्य अपने ही खान-पान, आराम, सुख-सुविधा पर सारी कमाई लगा देता है; मनुष्य को चाहिए कि दूसरों के हित के लिए भी तो कुछ करे। अतः ये १० पैसे एक निशानी मात्र हैं जो हमें शिव बाबा की प्रतिदिन याद दिलायेंगे और 'विश्व-कल्याणार्थ आत्म-समर्पण का पाठ पढ़ायेंगे। जो मनुष्य दूसरों की सेवा के लिए कुछ भी नहीं करता उस कंजूस मनुष्य का पैसा यों ही चला जाता है। मनुष्य में दूसरों के शुभचिन्तन की वृत्ति तो होनी ही चाहिए। फिर, ये तो मनुष्य की स्वेच्छा और आर्थिक स्थिति पर निर्भर है। इसमें अन्य किसी का बन्धन नहीं है, कल्याण-भावना ही की प्रेरणा इस शुभ कर्म की संचालिका है। पुनश्च, यह सूत्र प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियों ही के लिए संकेतक है। ये विश्व-कल्याणार्थ रचे गये 'ज्ञान-योग महायज्ञ' के लिए सहयोग की परिचायिका सद्‌भावना है और प्रतिदिन आने के लिए और महादानी तथा विश्व-कल्याणी बनने की ओर एक कदम है।

संसार के लोग १० पैसे को एक अत्यन्त न्यून या अल्प धन-राशि मानते हैं। है तो यह न्यून ही परन्तु इसके पीछे एक बहुत बड़ी दिव्य भावना छिपी हुई है। वह है परोपकार या लोक-सेवा की भावना जिसके बिना मनुष्य का जीवन अकारथ है। दस पैसे का मूल्य न समझ कर उसे बेपरवाही से यों ही दे देने अथवा फ़ज़ूलखर्ची करने से छुटकारा दिलाने की यह एक विधि है। जब हरेक के दस-दस पैसे इकट्ठे होकर विश्व-कल्याण का कार्य कर सकते हैं तो फिर हम जिस-किसी भी काम पर १० पसे कम खर्च कर सकते हैं, उससे कम करके उसे सेवा-कार्य में क्यों न लगाएँ। एक-एक पैसे का अपना मूल्य और अपना उपयोग है। ज्ञानामृत के प्यासे को ज्ञानामृत पिलाने, शान्ति के प्यासे को योग सिखाने, प्रभु-दर्शन के लिए तड़पते हुए को प्रभु-मिलन का मार्ग दिखाने, बुरी आदतों से परेशान व्यक्ति को कुसंस्कार की कैद से छुड़ाने के लिये १० पैसे का बहुत ही अधिक महत्त्व है। अपने को हर प्रकार से दूसरों की सुख-शान्ति के लिए सहयोगी बनाने का यह एक प्रकार का यज्ञ है। यह दूसरों के आगे भी एक उदाहरण है कि वे सिगरेट, नावल, सिनेमा, व्यर्थ स्वाद-साधना एवं फ़ज़ूलखर्ची को छोड़कर १० पैसे "बचत योजना" को क्रियान्वित

करें तो विश्व में जन-जन का कल्याण होगा।

जन-जन से अपील

इस प्रकार १०-सूत्री कार्यक्रम को लेकर ये जो विश्व-कल्याणार्थ 'ज्ञान-योग महायज्ञ' रचा गया है, इसके लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय विश्व के सभी नर-नारियों से, चाहे वे किसी भी देश, धर्म, जाति, रंग, भाषा आदि वाले हों, से अपील करता है कि इस विश्व की स्थिति को सुधारने के लिए सभी तीन प्रकार का सहयोग दें :—

१. प्रतिदिन प्रातः ७ बजे १० मिनट विशेष रूप से परमपिता परमात्मा की स्मृति में मन को एकाग्र करें ताकि विश्व में शान्ति और पवित्रता के प्रकम्पन फैलें। चाहे कोई किसी भी मत, वाद या धर्म को मानता हो, उस भेद-भाव को छोड़कर यह थोड़ा-सा समय तो परमात्मा की याद में दें।

२. उपरोक्त १० बुराइयों में से कम-से-कम एक बुराई को इन १० महीनों में पूर्णतः छोड़ें और शेष नौ को १० प्रतिशत कम करें तथा उपरोक्त १० दिव्य गुणों में से एक को अच्छी तरह धारण करें और शेष नौ में १०% वृद्धि करें।

३. प्रतिदिन १० मिनट आत्म-निरीक्षण करके देखें और एक दिव्य गुण का गहराई से मनन करें तथा उस दिन अपने मन-वचन-कर्म में उस पर विशेष ध्यान दें।

यहाँ जिस १० सूत्री कार्यक्रम का उल्लेख किया गया है, वह देखने में तो मात्र एक आध्यात्मिक ही योजना लगती है परन्तु वास्तव में उसका प्रभाव समाज के हर पहलु पर है। 'काम' विकार के विसर्जन में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि की रोकथाम और तत्सम्बन्धी आर्थिक समस्याओं का हल निहित है। क्रोध के त्याग से तनाव, मुकद्मेबाज़ी, कत्ल आदि अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध-नीति जैसे क्रूर कर्मों की समाप्ति का वास्तविक हल समाया हुआ है। लोभ-मुक्ति के पुरुषार्थ से आर्थिक शोषण, रिश्वत आदि से समाज को छुटकारा मिलेगा।

धार्मिक नेताओं तथा राजनीतिज्ञों से अपील

ईश्वरीय विश्व-विद्यालय धार्मिक संस्थाओं और नेताओं से भी अपील करता है कि वे अपने-अपने शिष्यों या सम्पर्क में आने वालों को इसके लिए प्रेरित करें ताकि देश और विश्व का कल्याण हो। ये कार्यक्रम ऐसा है कि जो सभी का साँझा कार्यक्रम हो सकता है, अतः सभी इसे अपना ही मानकर देश में सद्भावना, प्रेम, सदाचार और दिव्यता की स्थापना के लिए इस द्वारा मानव-समाज का कल्याण करने में परमपिता परमात्मा के शुभाशीश के पात्र बनें तथा इस महायज्ञ को सफल करने में सहयोगी बनें।

—जगदीश

आवश्यक सूचना

इस अंक के साथ 'ज्ञानामृत' पत्रिका का १५वाँ वर्ष समाप्त हो रहा है। जून अंक आगामी वर्ष का प्रथम अंक होगा। चूंकि कागज़ का मूल्य बढ़ गया है और हम आगामी वर्ष में १२ अंकों की बजाय कम-से-कम १५ अंक देंगे, अतः इसका वार्षिक शुल्क अब २० रुपये कर दिया गया है। अतः ज्ञानामृत के सदस्यों से निवेदन है कि वे शीघ्र ही अपना वार्षिक शुल्क भेज दें। ईश्वरीय सेवा केन्द्रों से भी निवेदन है कि वे लिखें कि अगले वर्ष कितनी प्रतियाँ चाहियेंगी और शुल्क भी भेजें।

—व्यवस्थापक, ज्ञानामृत

भटकती आत्मा

लेखक : डा० रामा इलोक, मधुबन (आबू)

भारतीय संस्कृति के अनुसार भटकती हुई आत्माओं की कहानियां सदैव पढ़ने व सुनने को मिलती ही हैं। साथ-साथ भूत-प्रेत आत्माओं के भटकाव का कुछ कार्य-कलाप भी देखने को मिलता है। इसीलिये आत्मा व परमात्मा के सत्यता और अस्तित्व को भारतवासी बड़े ही गौरव, आत्मविश्वास और दृढ़ता से मानते आये है। अभी यह प्रचलन विदेशों में काफ़ी चल रहा है, वहां के लोग भी आत्मा के अस्तित्व एवं कर्म फल (Karma Phylosophy) पर आस्था रखने लगे हैं। इसके दो पहलू हैं –

(i) **पहला**– यह तो सर्वविदित है कि आत्मा अविनाशी है, चेतन है और ५ तत्त्वों से बना हुआ देह नश्वर है। अर्थात् मृत्युशय्या पर नश्वर शरीर को छोड़ने के पश्चात् जिस आत्मा को तुरन्त पुनर्जन्म लेकर दूसरा शरीर नहीं मिलता, वह आत्मा भूत-प्रेतात्मा के नाम से यत्र-तत्र दूसरे मानव शरीर में प्रवेश कर अनेकानेक अकर्त्तव्य करते देखा गया है, जिसे लोग (Evil soul) की प्रवेशता कहते हैं। इन आत्माओं को अपना शरीर न होने के कारण, ये वायुमण्डल में इधर-उधर भटकती रहती हैं, और अन्य आत्माओं को भय व दुःख पहुँचाती रहती हैं।

(ii) **दूसरा पहलू**—मानव शरीर में निवास करती हुई हरेक आत्मा अपनी निजी तीन शक्तियाँ मन, बुद्धि एवं संस्कार को न जानने के कारण, बे-लगाम मन, भ्रष्ट बुद्धि एवं कुसंस्कारों के वश यत्र-तत्र भटकती रहती हैं। यद्यपि आत्मा इस भौतिक शरीर द्वारा अनेक प्रकार की शिक्षा (डिग्री), विनाशी धन व ताकत अर्जित करती है, तथापि वह उसका सदुपयोग न करने से आन्तरिक, अविनाशी सच्चे सुख-शान्ति के अनुभूति से वंचित रह जाती है और इस संक्रामक बीमारी के शिकार, केवल एक-दो नहीं बल्कि समस्त विश्व की सभी मनुष्यात्मायें हैं। इसका सर्वेक्षण मैंने अच्छी तरह किया है। इसके अनेक कारण हैं, परन्तु मुख्य कारण यह है कि हर आत्मा को अपने निजी स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश, स्वयं के गुण-अवगुणों की सही जानकारी नहीं, सही ठिकाना नहीं, जिस सत्य की खोज में वह हैं, उसकी सच्ची अनुभूति व प्राप्ति नही; उदाहरणार्थ मैं इसकी पुष्टि एक सत्य घटना द्वारा करता हूँ।

"शान्ति, शान्ति, शान्ति···मुझे सच्ची मन की शान्ति के सिवाय और कुछ नहीं चाहिये ! हे प्रभु ! क्या मेरी किस्मत में शान्ति लिखी ही नहीं है ? कब तक भटकता रहूँगा ?"—आगन्तुक गृह में प्रवेश करते हुये एक महात्मन् बोले।

मैंने उनका अतिथि सत्कार करते हुए सामने सोफे पर बैठने को आग्रह किया और जलपान हेतु शीतल जल ले आया। अतिथि महोदय दो घूंट पानी पीकर बोले—"क्या मुझे यहां शान्ति मिलेगी ?"

मैं ने कहा, "क्यों नहीं, जरूर मिलेगी ! यह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय है, इसका मुख्य उद्देश्य है—हरेक मानव को सम्पूर्ण सुख-शान्ति एवं पवित्रता प्रदान करना। लेकिन शान्ति चाहिये किसको ?"

उन्होंने कहा—मुझे !

मैंने अगला प्रश्न किया—आप कौन ? आपका परिचय ? उन्होंने बड़े ही गौरव से उत्तर दिया—"मैं पण्डित डा०·····शास्त्री, उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ, वेद शास्त्रों पर अच्छा कमान्ड है, भारतीय दर्शन में पी० एच० डी० किये हुए हूँ, घर का बड़ा ही सुखी और सम्पन्न हूँ, इलाके में मेरी तूती बोलती है, मेरे दो लड़के एवं एक लड़की है, लड़की का ब्याह हो चुका है। एक लड़का डाक्टर और दूसरा इन्जीनियर है, वे सभी अच्छे ही खुशी मौज में हैं !"

मैं बीच में ही बोल उठा—"महात्मन् ! आपका ऐसा वेश-भूषा क्यों ?" वे एक सफ़ेद धोती और बनियान पहने हुए थे, कमर में एक लाल अंगोछा बँधा हुआ था। मूँछ-दाढ़ी बढ़ी थी, चेहरे पर

विस्मय और निराशा नजर आ रही थी।

उन्होंने आगे बताया—"मेरे घर में हरेक भौतिक वस्तु उपलब्ध होते हुए भी मेरा मन ज़रा भी घर में नहीं लगता। मन इधर-उधर शान्ति की तलाश में भटकता रहता। एक दिन प्रोफ़ेसर की नौकरी त्याग कर मैं शान्ति की खोज में हरिद्वार चला गया। वहां कुछ महीने रहा, सभी आश्रमों का निरीक्षण किया। परन्तु निराशा ही निराशा हाथ लगी। तत्पश्चात् मैं वहां से बम्बई चला गया और एक बड़े नामी-ग्रामी आश्रम में तीन वर्ष रहा। आश्रम के महन्त कर्मठ, सज्जन एवं संत पुरुष हैं। उन्होंने अपनी कठोर तपस्या एवं ब्रह्मचर्य बल के द्वारा आश्रम को बहुत ही आधुनिक और अन्तर्राष्ट्रीय बना रखा है। उनके अनेकानेक शिष्य हैं, जिसमें विदेशी काफ़ी संख्या में हैं। आश्रम की स्वच्छता सभी का आकर्षण का केन्द्र है। कीर्तन-भजन में व्यस्त रहने के कारण वातावरण बड़ा ही मनमोहक है।"

मैंने पूछा—"फिर आप वहां से क्यों चल दिये? क्या वहां भी आपको शान्ति नहीं मिली?"

हिचकते हुए उन्होंने कहा—"जी नहीं! जब तक कीर्तन, भजन करता रहा, माला फेरता रहा, शास्त्र पढ़ता रहा, तब तक तो मन उसी में लगा रहा, परन्तु ज्यों ही यह दिनचर्या समाप्त होती, मेरा मन फिर इधर-उधर भटकने लगता। वैसे तो मैं पढ़ा लिखा एवं बुद्धिजीवी होने के कारण, आश्रम में अच्छा ही स्थान प्राप्त कर लिया था, परन्तु···उनका गला रुंध गया और वे चुप हो गये।

मैंने पूछा—"आगे क्या हुआ? उन्होंने बड़ी हिम्मत से आगे का प्रसंग सुनाना शुरू किया। कहा—"एक रात की बात है, आश्रम के सभी सन्त-महात्मा विश्राम कर रहे थे। मैं आश्रम के सर्वे सर्वा महन्त जी के बगल के कमरे में आराम कर रहा था। तभी कहीं से सिसकियाँ भरने की आहट आयी, जैसे कोई रूदन कर रहा हो। मैं झट उठ बैठा और चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा, थोड़ी देर बाद जब दरवाज़ा खोलकर बाहर आया तो महन्त जी के कमरे से ही सिसकियों की आहट आ रही थी। मैंने भाग कर उनका दरवाजा खटखटाया, तो महन्त जी, जल्दी बाजी में अश्रुधारा पोछते हुए, एक बनावटी मुस्कान के साथ मुझसे पूछा—क्यों? शास्त्री जी, आपकी भी नींद खुल गयी? मैं तो सोचा था—सभी सो रहे हैं।"

शास्त्री जी ने महन्त जी से पूछा—"आज आपकी तबीयत ठीक नहीं है? क्या सिर में दर्द है—महाराज!"

उन्होंने बड़ी ही गम्भीरता एवं निराशापूर्ण उत्तर दिया—"क्या बताऊँ शास्त्री जी, मुझे सिर में नहीं दिल में दर्द हो रहा है। मेरी उम्र घटती जा रही है, इतना बड़ा आश्रम है, मेरे पीछे इसे कौन सम्भालेगा? मेरे शिष्यों के आपस में मतभेद हैं। मैं किसे उत्तराधिकारी बनाऊँ, यही सोच-सोच कर मैं बेचैन हूँ। मेरी आत्मा जीते-जी भटक रही है," और यह कहते-कहते उनकी आंखें गीली हो गईं।

मैं (शास्त्री जी) अपने कमरे में पुनः वापिस आ गया और प्रभात की इन्तज़ार करने लगा। विस्तर पर लेटे-लेटे मैं भी अतीत में खो गया। सोचा इतने बड़े करोड़ों के मालिक सन्त जी की यह हालत है, फिर मेरी क्या होगी? सबेरा होने वाला था, चिड़ियां नव प्रभात की आगमन की खुशी में, "चीं-चीं-चीं" के स्वर लहरी में जागृति गीत गा रही थीं। पौ फटते ही मैंने अपनी धोती और अंगोच्छी सम्भाली तथा तीसरे दिन यहां आबू पर्वत पर आ पहुँचा। आपके बाहर पाण्डव भवन का बोर्ड पढ़कर व्यथित मन से अन्दर आया और शान्ति की सांस लेते हुए शान्ति की जिज्ञासा की।

मैंने स्वस्थिति अर्थात् आत्मा स्वरूप, में टिककर उन्हें बताया कि शान्ति की तलाश इस शरीर को नही, परन्तु इस नश्वर शरीर में स्थित चेतन आत्मा को है, जो जन्म-जन्मान्तर से भटकती आ रही है। अब निराश होने की बात नहीं! यहां सर्व आत्माओं को सही ठिकाना देने वाले, मोहताज को सिरताज बनाने वाले, हमारे परम शिक्षक, परम पिता परमात्मा निराकार शिव हैं, जो अभी साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से यही पहला पाठ पक्का कराते हैं कि तुम कौन हो? तुम शरीर नहीं परन्तु शरीर में स्थित, कार्यरत चेतन आत्मा हो। और इसी एक पहले पाठ की जानकारी न होने के कारण,

देह-अभिमान-वश, देह और देह के सम्बन्धों, दैहिक आकर्षण से पांच भूतों के वशीभूत होकर सभी आत्मायें इस असार संसार में भटकने लगती हैं और लाख पूजा-पाठ, धर्म नेम, तीर्थ व्रत, वेद-शास्त्र के अध्ययन के बाद भी सच्ची सुख-शान्ति के अनुभूति से वंचित रह जाती हैं।

अब गीता के भगवान परमात्मा त्रिमूर्ति शिव स्वयं कह रहे हैं—"हे मेरे मीठे-मीठे बच्चो—अब भटकना बन्द करो, अपने श्रेष्ठ मन और बुद्धि को मेरी याद में एकाग्र करो, मनमना भवः, मद्या जी भवः। एक मेरी ही याद से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के सभी पाप भस्म हो जायगें और तुम लक्ष्मी-नारायण जैसे देवता बन जाओगे।

मैंने शास्त्री जी को आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति करने के लिए तीन दिन के राजयोग शिविर में भाग लेने को कहा और उन्होंने वैसा ही किया तीन दिन के अभ्यास के पश्चात् उन्होंने अपने अनुभव में बताया कि शास्त्रीय ज्ञान होते हुए भी, मैं खोखला था। आज ईश्वर पिता से मैंने अपना अविनाशी पिता-पुत्र का सम्बन्ध स्थापित कर लिया है। एवं सदा के लिये सच्ची सुख-शान्ति से अपनी झोली भर कर जा रहा हूँ। मेरे और भी दो विदेशी मित्र इधर-उधर भटक रहे हैं, मुलाकात होने पर उन्हें भी सही रास्ता प्रदान करूँगा। यह कहते-कहते उनके आखों से प्रभू प्रेम के दो बूँद मोती छलक पड़े।

"शिव का परिचय प्यारा-२ है"

लेखक ब्रह्माकुमार सूरज प्रकाश, सहारनपुर

द्वापर युग से लेकर जिसको हमने रोज़ पुकारा है
कहा सभी ने अब तक जिसको नाम रूप से न्यारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है
पाकर उनको चढ़ गया मुझको अब खुशियों का पारा है

ज्ञान के सागर आये ज्ञान की मुरली बजाने
प्रेम के सागर आये प्रेम-स्वरूप बनाने
प्यार के सागर आये रूहानी प्यार लुटाने
सुख के सागर आये सुख के झूले में झुलाने
मँझधार में फँसी मेरी नैया को मिल गया किनारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है

हाँ कट जायेगी अब फिर से रात दुखों की काली
होगा नया सवेरा होगी चारों तरफ़ खुशहाली
हां कल भारत होगा सतयुग सम्पन्न वैभवशाली
भरे-पूरे नवयुग में होगी फिर से सच्ची दीवाली
होगा फिर से इस सृष्टि पर स्वर्ग का सुन्दर नज़ारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है।

मनमनाभव का मंत्र दिया आकर के हमें जगाया है
हमने वही भागवत का सुख अतिन्द्रिय पाया है
मोहमाया की तोड़ जँजीरें, शिव को मन में बसाया है
शिव में सब-कुछ देखा हमने, शिव में सब-कुछ पाया है
शिव ही मात पिता बन्धु, शिव ही सच्चा सहारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है

लग गयी बाबा से मेरे अब दिल की लगन
हो गया मन उनकी अब याद में मगन
मैं हूँ उनकी सजनी वो हैं मेरे सजन
आज नहीं पड़ते मेरे धरती पर कदम
चमक गया फिर से अब मेरे भाग्य का सितारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है

मधुबन अपना प्यारा देखो सारे जग से निराला है
यहीं पे पीते ब्राह्मण भर-भर ज्ञानामृत का प्याला है
पीकर चढ़ता रूहानी नशा मन होता मतवाला है
माया को फिर मार भगाते बन कर महा ज्वाला है
सारे जग में ऊँचा सबसे मधुबन तीर्थ हमारा है
हमें मिला है उसी प्रभु का परिचय प्यारा-प्यारा है

संवाद

पतंजली योग और राजयोग

योगीराज, मधुबन, माउण्ट आबू

(एक संन्यासी अपने अनन्य शिष्य के साथ बैठे हैं। शिष्य गुरुजी से कुछ शंकाएँ निवारण कर रहा है।)

शिष्य—गुरुजी, आज मुझे पतंजली योग पर कुछ चर्चा करनी है।

गुरुजी—अवश्य बेटा, ज्ञान चर्चा से तेरा ज्ञान वृद्धि को प्राप्त होगा। मैं ३० वर्ष से इस अष्ठांग योग का अभ्यास कर रहा हूँ, इसकी मुझे पूर्ण जानकारी है।

शिष्य—गुरुजी, मैं यही सोचता हूँ कि आप इतने लम्बे समय से इस योग का अभ्यास कर रहे हैं फिर भी आपका क्रोध···

गुरुजी—बेटा प्राचीनकाल में ऋषियों ने तो हज़ारों वर्ष तक तपस्या की थी, फिर भी क्रोध की अग्नि से नहीं बच पाये। वो तो कामवश भी हुए। मुझे तो अभी ३० वर्ष ही···

शिष्य—गुरुजी, यही तो मेरा भी प्रश्न है कि इतनी कठिन तपस्याओं के बाद भी मनोविकार क्यों नहीं छूटते। मुझे कभी-कभी ख्याल आता है कि ये योग की विधि कहीं अपूर्ण तो नहीं···

गुरुजी—बेटा पतंजली जैसे महर्षि ने जिस योग का प्रतिपादन किया, उसे अपूर्ण कहने का साहस तो हम नहीं रख सकते।

शिष्य—परन्तु महाराज, सत्य की खोज में तो सदा ही मनुष्य को रहना चाहिए। बुद्धि को बन्द कर देना भी तो उचित नहीं।

गुरुजी—तुम अवश्य ही विश्व में कीर्तिमान होगे बेटा, बोलो तुम्हारे मन में क्या चिन्तन चलता है?

शिष्य—सबसे पहले तो योग शब्द ही अद्वैत सिद्धान्त को खण्डित करता है। योग अर्थात् किन्हीं दो का मिलन। कहीं-कहीं वर्णन भी तो आया है कि आत्मा और परमात्मा का मिलन ही योग है। यह तो अद्वैत के प्रतिकूल है। जब है ही एक तो योग कैसा?

गुरुजी—बेटा, महर्षि पंतजली ने तो कहा है कि चित्त वृत्ति का निरोध करना ही योग है।

शिष्य—महाराज चित्त की तो बुरी वृत्ति का ही विरोध करना होगा।

गुरुजी—हाँ बेटा।

शिष्य—महाराज, क्या चित्त की कभी अच्छी वृत्ति भी थी?

गुरुजी—हाँ बेटा, अच्छी ही तो बुरी बनती है।

शिष्य—महाराज चित्त की श्रेष्ठ वृत्तियाँ दूषित कैसे हो गईं?

गुरुजी—बेटा, ये सब मनोविकारों के कारण हुआ।

शिष्य—महाराज, ये विकार मन में कब आये और क्यों आये?

गुरुजी—इस पर तो विचार करना पड़ेगा बेटा। शास्त्रों में इसके लिए कोई विशेष स्पष्टीकरण नहीं जान पड़ता।

शिष्य—गुरुजी, दूसरी बात भी मेरे मन में उठती है।

गुरुजी—आपकी सद्बुद्धि हो बेटा, आप अवश्य ही किसी नवपथ की खोज करोगे।

शिष्य—महाराज, "चित्त की वृत्तियों का विरोध"—यह योग नहीं, बल्कि योग की सिद्धि है। योग-अभ्यास से मन स्वच्छ होता है। हाँ प्रारम्भ में कुछ यम-नियमों का तो पालन करना ही पड़ेगा, परन्तु वह योग है क्या?

गुरुजी—इसमें हमें मन के सभी विचारों को शान्त करना होता है, तब ही समाधी लगती है।

शिष्य—इससे क्या होगा?

गुरुजी—यही मोक्ष का साधन है।

शिष्य—परन्तु महाराज, मोक्ष के लिए तो कर्मों के सम्पूर्ण संचय से निवृत्त होना पड़ेगा।

गुरुजी—हाँ बेटा, इसीलिए तो निर्संकल्प समाधी का परम महत्त्व है। जब संकल्प ही समाप्त हो गये तो कर्म तो स्वतः ही समाप्त···

शिष्य—महाराज, निर्संकल्प समाधी से कर्म तो अवश्य ही समाप्त होंगे, परन्तु जो पूर्व जन्मों का कर्म संचय है, इससे निवृत्ति कैसे होगी ?

गुरुजी—बेटा, इस योग को अग्नि कहा जाता है, इससे सभी कर्म विकर्म दग्ध हो जाते हैं।

शिष्य—जैसा तुमने स्पष्ट किया इस अष्ठांग योग की अन्तिम निर्संकल्प समाधी पर पहुँचने से कर्म व संकल्प तो बन्द हो जायेंगे, परन्तु इस योग रूपी अग्नि से पूर्व के विकर्म दग्ध कैसे होंगे ? कृपा करके यह मुझे समझाइये। और यह भी बताइये कि हमारा विकर्म-संचय कम हो रहा है यह कैसे जानें ?

गुरुजी—बेटा बहुत गहन विषय चुना है। इतनी गहराई से तो मैंने कभी विचारा नहीं है। कई उपनिषदों में इसी प्रकार का वाद-विवाद आया है, परन्तु··· बात आपकी सबल महसूस होती है बेटा, भगवान तुम्हारा विकास करे···

शिष्य—महाराज आजकल जब भी मैं समाधी में बैठता हूँ, तो मुझे कुछ प्रेरणा आती है···मानो कोई कहता है, कि यह योग अपूर्ण है—इससे तुम अपनी सिद्धि को प्राप्त नहीं होगे···परन्तु इसको पूर्णता क्या होगी, यह कुछ समझ में नहीं आता।

गुरुजी—बेटा, ऐसा ही आभास मुझे भी होता है। मन निर्संकल्प होता ही नहीं। यह मेरा ही अनुभव नहीं बल्कि अनेक ऋषियों के भी ऐसे ही अनुभव हैं। यही सोचता हूँ कि इस प्रकार चित्त की वृत्तियों का निरोध होता प्रतीत नहीं होता।

बेटा, कभी-कभी ऐसा लगता है कि हो न हो सत्य कहीं हमसे दूर हो···परन्तु इसके आगे बुद्धि काम करना बन्द कर देती है।

शिष्य—हाँ महाराज, यही मेरा भी अनुभव है। परन्तु सत्य का बोध आखिर भी करायेगा कौन !!

गुरुजी—बेटा, अवश्य ही कभी प्रभु प्रकट होंगे और हमें हमारी अपूर्णताओं का बोध करायेंगे।

(एक श्वेत वस्त्र धारिणी ब्रह्माकुमारी का प्रवेश)

ब्रह्माकुमारी—ओम शान्ति महाराज···

गुरुजी—ओम शान्ति, शान्ति, शान्ति !!!

ब्रह्माकुमारी—महाराज हमने एक आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया है जिसमें भारत के प्राचीन राजयोग पर प्रकाश डाला जायेगा, आप तो योग सिद्ध महात्मा हैं। आप हमारे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बनकर हमें प्रोत्साहित करें।

गुरुजी—बेटी, परन्तु मुझे आपके बारे में कुछ भी मालूम नहीं, आप क्या सिखाती हैं ? सुना है आप शास्त्रों को भी नहीं मानती हैं, फिर आपका आधार क्या है ?

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी, शास्त्र तो मनुष्य कृत हैं। और भला अल्पज्ञ आत्माएँ सम्पूर्ण ज्ञान कैसे दे सकती हैं ?

गुरुजी—तो आप क्या कहना चाहती हो बेटी···

ब्रह्माकुमारी—महाराज, हम जो ज्ञान देते हैं, वो ज्ञान न हमारा है, न वेदों का, हमें तो यह ज्ञान निराकार परमात्मा ने, जो कि ज्ञान का सागर है, प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा दिया है।

गुरुजी—ऐसी बात···आप क्या सिखाते हैं ?

ब्रह्माकुमारी—ज्ञान और योग···

गुरुजी—क्या महर्षि पतंजली द्वारा सिखाया गया अष्ठाँग योग ?

ब्रह्माकुमारी—हम वह राजयोग सिखाती हैं, जो स्वयं परमात्मा ने हमें सिखाया है। वह ही भारत का प्राचीन योग है, जो कालान्तर से लोप हो गया था और पुनः परमात्मा ने सिखाया है। वह योग ही सम्पूर्ण है, उसके अभ्यास से ही मनुष्यात्मा सम्पूर्ण बन सकती हैं। यों तो आज तक कई ऋषियों ने भी राजयोग सिखाये हैं, परन्तु यह योग उनसे सर्वथा भिन्न है।

गुरुजी—तो आपके योग में पतंजली योग में क्या अन्तर है ?

ब्रह्माकुमारी—ऐसे तो आप पतंजली योग का सम्पूर्ण ज्ञान रखते ही हैं, उसके आठ अंग हैं। और अन्तिम स्थिति समाधी है, उसमें ही निर्संकल्प

समाधी सर्वश्रेष्ठ कही है, जिसका साधक अभ्यास करते हैं।

गुरुजी—हाँ बेटी···

ब्रह्माकुमारी—परन्तु महाराज इस योग में परमात्मा का कोई स्थान नहीं है। जबकि योग का अभिप्राय है—आत्मा व परमात्मा के मिलन से।

गुरुजी—(विचार मग्न) हाँ बेटी ऐसा ही शास्त्र मत भी है···

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी, पहले हम आत्मिक स्थिति में स्थित होते हैं अर्थात् अशरीरी यानि निर्संकल्प होते हैं फिर बुद्धि का सम्बन्ध परमधाम में स्थित परमात्मा से करते हैं।

तो इस प्रकार जहाँ पतंजली योग की समाप्ति होती है, वहाँ से इस राजयोग का प्रारम्भ होता है।

गुरुजी—(सिर नीचा करके सुनता रहता है)

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी आप सिर नीचा करके क्यों बैठते हैं ?

गुरुजी—बेटा, सन्यास के नियमों में नारी को देखने का निषेध है।

ब्रह्माकुमारी—परन्तु महाराज, आप तो नारियों से पैर दबवाते है।

गुरुजी—(बात टालते हुए)···हाँ बेटी आप योग पर कुछ कह रही थीं।

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी पतंजली योग व राजयोग में यह भी मुख्य अन्तर है कि वे आँखें बन्द करके योग करते हैं और राजयोगी आँखें खोलकर योग करते हैं।

गुरुजी—हाँ बेटी शास्त्रों में भी वर्णन आया है कि कुछ ऋषि चलते-फिरते भी समाधिस्थ रहते थे। ऐसे भी महान तपस्वी हुए हैं।

ब्रह्माकुमारी—तो स्वामी जी, अवश्य ही वो आँख खोलकर ही योग करते होंगे वास्तव में वो राजयोगी ही थे।

इसके अतिरिक्त दोनों योगों में एक मुख्य अन्तर और भी है—

गुरुजी—वो क्या बेटी ?

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी पतंजली योग से कर्म करना तो बन्द हो जाता है, परन्तु पूर्व के विकर्मो का विनाश नहीं होता। राजयोग से पूर्व के विकर्म दग्ध हो जाते हैं।

शिष्य—बहन, राजयोग से पाप नष्ट कैसे होते हैं ?

ब्रह्माकुमारी—राजयोग में आत्मा का सम्बन्ध सर्वशक्ति मान परमात्मा से होता है। उससे जो शक्ति का प्रवाह आत्मा को मिलता है, उस शक्ति रूप अग्नि से आत्मा के पाप नाश हो जाते हैं।

शिष्य—एक योग-अभ्यासी यह कैसे समझेगा कि उसके पूर्व के विकर्म दग्ध हो रहे हैं···

ब्रह्माकुमारी—विकर्म विकारो के रूप में मन पर लिप्त है, विकारों का छूटना अर्थात् विकर्मो का बोझ हटना। जैसे-जैसे मन से काम, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या द्वेष समाप्त होते हैं—तो अभ्यासी स्वयं को बहुत ही हल्का व हर्षित महसूस करता है। इस राजयोग के द्वारा हजारों आत्माएँ इन मनो विकारों से मुक्त हुई हैं।

गुरुजी—आपकी बातें बहुत ही सारयुक्त होती हैं बेटी ये बातें शास्त्रों में नहीं हैं···

ब्रह्माकुमारी—स्वामी जी अगर ये बातें शास्त्रों में होती तो अनेक आत्माएँ पापमुक्त हो गई होतीं। परन्तु पाप तो बढ़ता ही जाता है। इसलिए स्वयं भगवान को ही योग सिखाने आना पड़ता है।

इस योग से हम ईश्वरीय प्यार, आनन्द, अतिन्द्रय सुख अनुभव करते हैं। अन्य प्रचलित योगों से इस प्रकार की अनुभूति नहीं होती ?

गुरुजी—बेटी, अवश्य ही हम दोनों आपके पास आयेंगे और आपस में ज्ञान की गुह्य चर्चा करेंगे। □

मौन पुकार.....!

(ब्र० कु० अमोलक, भीलवाड़ा)

तारों के पार से,
उस वतन की ओर से···
इक मौन पुकार·····
खींचती है मुझे,
बार-बार
फिर
मौन पुकार—वही मौन पुकार !
यह क्या ?
किसने ये—
अव्यक्त किरणें,
बिछा दीं मेरी राहों में···?
पावन उजला,
सोझरा-सा
छा गया मेरी राहों में···!
·····और अब !
रूहानियत भरी,
अपनेपन की मिसरी घुली
आवाज इक आती है—
"देह को कर किनारे
चला आ,
अव्यक्त किरणों के सहारे-सहारे
मीठे बच्चे,
सिकीलधे प्यारे !!
और.....अब.....मैं
.....रह न पाता हूं
ज्योति से, ज्योति का, ज्योति-सा बन
उड़, पहुँच जाता हूँ—उस ओर,
उस ओर....., जहां
मेरे मीठे प्यारे बापदादा.....
गोदी बिछाये—मुझको बुलाये.....!
और जिनकी ही
इक मौन पुकार
खीचतो है मुझे बार-बार
तारों के पार से
वतन की ओर से !
मौन पुकार
वही मौन पुकार !!!

मेरे क्या कहने !

ब्र० कु० राजकुमारी नागपाल पांडव भवन देहली

मुझ-सा सम्पन्न कौन ? अजी, मेरे क्या कहने !
मेरे समक्ष प्रकृति भी मौन सितारे आए धरती
पे रहने !

फरिश्तेपन का तन मेरा, दिव्यता का वेश,
रुहानियत का रंग मेरा, परमधाम है देश;
परमधाम हैं देश, ज्ञान खज़ाना मेरा वैभव,
शिव-सा पति तो तारे सारा ही भव;
आत्मस्थिति का शृंङ्गार मेरा, दिव्य गुणों के गहने।
मुझ-सा सम्पन्न कौन ? मेरे क्या कहने !

ज्ञान-रत्न मेरे खेल खिलौने,
निश्चितता के बने बिछौने
रमन करूँ शुद्ध संकल्पों के बागों में,
गुनगुनाए मन अलौकिक रागों में;
पवित्रता है चली आई मेरे मन में रहने।
मुझ-सा सम्पन्न कौन, मेरे क्या कहने !

ईश्वरीय संदेश है मेरा धँधा,
चलूँ मिला खुशी के कँधे से कँधा;
चमके हर्षित चेहरा कान्ति से,
दान का भाल सजाए शान्ति से;
अमृतवेले परमपिता नित आते मुझ से कुछ कहने।
मुझ-सा सम्पन्न कौन ? मेरे क्या कहने !

पुण्य कमाई का मेरा बैंक बैलेंस,
सतयुगी गेट का पास मेरे लाइसेंस;
नित ब्रह्मा भोजन का भोग लगाऊं,
परमपिता के साथ योग लगाऊँ;
सौभाग्य खुद चला मेरे संग रहने।
मुझ-सा सम्पन्न कौन ? मेरे क्या कहने !

चुप रहने में सुख

ब्र० कु० सुषमा, कुलाबा, बम्बई

एक चुप और सौ सुख श्रुति के सुनने सुनाने का क्रम सदियों से चला आ रहा है। परन्तु समस्या का समाधान बनने के बदले 'चुप' खुद एक समस्या बन गई है ! किसी की एक बात सुनकर दस बातें उसे सुनाने तक का जोश आ जाता है। 'चुप' रहना वह अपने स्वाभिमान की हानि समझता है। फलस्वरूप 'एक चुप न रहने के कारण सौ दु:खों का आह्वान हो जाता है। महात्मा गांधी जी अधिकांश समय मौन व्रत का पालन करते थे। सहनशीलता के वे प्रतिमूर्ति थे। भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त उन्होंने अहिंसा एवं अस्तेय के बल पर ही किया। अहिंसा ने वह चमत्कार कर दिखाया जो हिंसा भी नहीं कर सकती। अपनी त्यागवृत्ति एवं सहनशक्ति के कारण गांधी जी भारत ही नहीं अपितु सारे विश्व में लोकप्रिय हो गये। महानता की मंजिल पर पहुँचने के लिये सहनशीलता की चढ़ाई तो चढ़नी ही पड़ेगी। पत्थर को भी देवमूर्ति रूप पाने के लिये छैनी हथौड़ी का चोट सहन करना पड़ता है तभी बाद में उस सहनमूर्ति देवमूर्ति पर पुष्पोहार चढ़ते हैं, स्तुतियां होती हैं।

प्राय: सुना गया है, लोग कहते हैं फलाँ ने ऐसा कहा हमने सहन कर लिया परन्तु मन में उबलते रहे। मानसिक तनाव बना रहा। वस्तुत: हमें स्वयं में सहनशीलता का गुण धारण करना है। सहन तो सब कर लेते हैं परन्तु सहन करने के साथ-साथ उसमें शीलता यानि पवित्रता भी हो ! सहनशील मन से भी शान्त रहता है। वह सदैव relax mood में रहता है।

सहन न होने का कारण

सत्य कड़ुआ होता है और कड़ वा सहन नहीं होता। हमारा निजि अनुभव कहता है कि जितना-जितना हम बाह्य से शान्त रहते हैं, सहनशीलता का गुण धारण करने में मदद मिलती है। कई कहते हैं हमने घर में भी सहन नहीं किया तो यहाँ क्यों करें ? लेकिन हमें यह सोचना चाहिये कि ज्ञान भी हमने यहीं आकर लिया है, घर में बैठकर तो लिया नहीं। इसलिये तब न सही पर अब तो सहनशीलता लानी ही चाहिये। जो सहन करते हैं उन्हें इतिहास याद करता है जो सहनशील बनते हैं उन्हें धर्मग्रन्थ याद करते हैं। सहनशीलता के समरूपता सहज न होने के कारण ये हो सकता है—

१. वहिर्मुखी रहने से अन्तर्मुखी नहीं बन पाते हैं फलस्वरूप सहनशीलता से कोसों दूर रहते हैं।

२. जहाँ स्नेह स्निग्धा नहीं वहाँ सहनशीलता नहीं। सुनने वाला स्नेही की बात का बुरा नहीं मानता।

३. प्रभुचिन्तन के बजाय स्वचिन्तन या पर-चिन्तन इस गुण धारण में रोधक होती हैं जो उत्थान के बदले पतन कर डालती है।

४. व्यर्थ बोलने व व्यर्थ सुनने से आत्मिक शक्ति क्षीण होतो जाती है। व्यर्थ को सार्थक में बदलने का हर संकल्प करना आवश्यक है।

५. ईर्ष्या की अग्नि हमारे सद्गुणों को जला देती है। योग अग्नि अवगुणों को भस्म कर सद्गुणों को प्रस्फुटित करेगी।

६. अनुमान कभी भी न लगाना चाहिये। अनुमान कभी हनुमान नहीं बनने देता।

७. गम्भोरता के अभाव में सहनशीलता मन्द पड़ जाती है।

८. चिड़चिड़ा स्वभाव हमें स्वयं भी दु:खी करता है और दूसरों को भी दु:खी करने के निमित्त बनता है।

९. श्रीमत पर न चलने से सहनशीलता धारण नहीं होती।

१०. 'मैं कोई कम नहीं' का नशा सहनशील बनने नहीं देता।

उपर्युक्त बातें हमारे पुरुषार्थ के मार्ग में दीवार बन जाती हैं। न हम खुद सन्तुष्ट हो पाते हैं और न दूसरों को ही सन्तुष्ट कर सकते हैं। हमारी माते-श्वरी जी कहा करती थी कि यदि दस बार किसी को जवाब न देकर एक बार भी जवाब दे दिया तो इसे सहन करना कहेंगे, सहनशीलता नहीं कहेंगे। ज्यादा बोलने वाले की अपेक्षा कम बोलने वाले का महत्व कहीं अधिक होता है। जितना-जितना हम शान्त व चुप रहते हैं उतना-उतना ही हम परम आनंद की, सुख की अनुभूति करते हैं।

सहनशील की निशानियाँ

सहनशील सदा दूसरों के कल्याण की बात सोचता है। उसके हर कर्म महान होंगे। बुद्धि की तार परमात्मा से जुड़े रहने के कारण मानसिक अवस्था ऊपर नीचे नहीं होती। वह एकाग्र बना रहता है। वह अपकारी पर भी उपकार करने वाला होगा। सर्व शक्तियों की वह प्रतिरूप होगा। उसके अन्तर्मन की ज्योति सदा जगती रहती है। वह हर कार्य में दक्षता प्राप्त करने के लगन में रहेगा। ऐसी आत्मा अनेकों को जीवन जीना सिखाती है। दूसरों को झुकाने के लिये पहले स्वयं तो झुकना ही पड़ता है।

सहनशील कैसे बने ?

समस्याओं से भरी इस दुनिया में प्रतिपल कोई न कोई समस्या आती ही रहती है। समस्याओं के सामने घुटने न टेक देना चाहिये बाल्कि सोचना चाहिये कि मैं तो पूज्यनीय, देवरूप बनने वाला हूँ। अतएव मुझे शान्त चित्त हो शिव बाबा को याद कर इन विघ्नों को पार करना है। विघ्न विनाशक प्रभु मेरे साथ हैं, ये विघ्न तो कागज के शेर हैं। प्रभु याद रूप लिफ्ट में बैठते ही विघ्नों से परे हो जाते हैं।

सहनशील व्यक्ति का मन शीतल रहता है। राग, ईर्ष्या, द्वेष की अग्नि अन्तर्मन में प्रज्ज्वलित नहीं होती। अगर कभी किसी को हमारी शुभ राय या विचार न पसंद आये तो फिर क्यों, क्या के संकल्प न उठने चाहिये। हम तो शिव बाबा के बच्चे हैं। बच्चे को भला विचार ही कैसे आ सकता है। अन्य आत्माओं के संग में आकर मुझे अपनी शान्ति भंग नहीं करनी है। हम तो महावीर हैं, इन छोटी-मोटी बातों से हमारी अवस्था क्यों छोटी होने लगेगी। मेरा तो प्रभु का साथ हो, ये समस्यायें तो मेरे लिये वरदान हैं। इन विघ्नों पर विजय प्राप्त कर ही तो मुझे विजयमाला का मणका बनना है। ये सब तो परीक्षायें हैं। जब इन परीक्षाओं में पास न होंगे देवी-देवता सम कैसे बनेंगे। इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते जाना ही गोया देवी-देवता बनने के चरम लक्ष्य के नजदीक होते जाना है।

स्नेही की बातें सहन करते जाना कोई बड़ी बात नहीं वस्तुतः निन्दा, ग्लानि करने वालों के प्रति भी हमारी दृष्टि-वृत्ति स्नेह रूप ही रहे, सहन-शीलता की निशानी है। मित्र को तो सभी मित्र समझते हैं। दुश्मन को भी मित्र समझने में महानता है। दुश्मन को मित्र एवं सहयोगी बनाने में ही कमाल है।

प्रायः सुनने में आता है फलाँ व्यक्ति ने कहा तो मैंने कहा। वह ग्लानि व अवस्था नीचे गिराने वाली बातें करता है तो मैं कब तक सहनशीलता की मूर्ति बना रहूँ ? आखिर भी आदमी कब तक चुप रह सकता है। मान लीजिये कोई विद्यार्थी एक ही क्लास में पाँच वर्षों से फेल होता आ रहा है। उसके नये साथी जो चतुर्थ वर्ग पास होकर आयेंगे, वह यह नहीं सोचेंगे कि ये महोदय पाँच वर्षों से फेल होते आ रहे हैं तो मुझे भी फेल होना है, नहीं वह कदापि नहीं सोचेगा। उसी तरह हरेक के अपने कर्म व संस्कार हैं। हमें तो उनकी बुराइयों से प्रेरणा ले अपने को सुधारना है न कि उन्हीं बुराइयों का अनुसरण करना है।

सहनशीलता और महानता दोनों एक दूसरे के पूरक (Complementary) हैं। सहनशीलता नहीं तो महानता नहीं। और महानता के बगैर सहन-शीलता का अस्तित्व ही कहाँ है।

"अपने से पूछो"

ब्रह्माकुमार जसवन्त, मधुबन, आबू

नीचे कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं। आप अन्तर्मुखी होकर स्वयं से ये प्रश्न पूछे तो सहज ही पुरुषार्थ में तीव्रता आ सकती है·····

प्रथम प्रश्न—मैं क्या पुरुषार्थ करता हूँ·····
और क्या कर सकता हूँ ?

निश्चय ही मन गवाही देगा कि मैं, जो पुरुषार्थ कर रहा हूँ, उससे कई गुणा ज्यादा कर सकता हूँ। तो जो मैं कर सकता हूँ वो तो कर लूं ताकि अन्त में मेरा मन यह सोचकर न पछताए कि मैं कर तो सकता था, परन्तु मैंने किया नहीं।

दूसरा प्रश्न—मुझे क्या-क्या संकल्प चलते हैं···
क्या उनकी आवश्यकता है ?

मन हंसेगा, स्वयं के ही विचार-प्रवाह को देखकर और यह भी कहेगा कि इनकी आवश्यकता भी नहीं है। देखा गया है कि कार्य में तो मनुष्य के बहुत कम संकल्प प्रयोग होते हैं, शेष लगभग ८०% संकल्प बिना अर्थ हो जाते हैं। जिनकी कोई आवश्यकता नहीं हैं।

इस विचार से सहज ही हम अपने संकल्पों की असीम शक्ति को बचाकर संग्रह कर सकते हैं।

तीसरा प्रश्न—शिव बाबा का बनकर भी अगर मेरे मन में व्यर्थ संकल्प चलते हैं···

तो क्या मैं पुनः पुरानी राहों पर जाना चाहता हूँ ?

मन धिक्कारेगा···नहीं। मैं किसी शर्त पर भी प्यारे शिव बाबा का हाथ नहीं छोड़ूँगा, चाहे मुझे जान की भी बाजी लगानी पड़े। तो जिन राहों पर हमें जाना ही नहीं, उनका चिन्तन क्यों·····

इस प्रकार स्वयं से रूह-रिहान करने से जीवन में बहुत दृढ़ता आयेगी और ऐसे आत्मघाती विकल्पों से हम दूर हो सकेंगे।

चौथा प्रश्न—मैं सारा दिन कितनी वाचा प्रयोग करता हूं। क्या उतनी आवश्यक है ?

अवश्य ही आप यह निर्णय लेंगे कि हमें दिनचर्या का व्यवहार चलाने के लिए बहुत ही कम वाचा की आवश्यकता है। कम वाचा के प्रयोग से भी अधिक कार्य किया जा सकता है। तो फिर क्यों अपनी शक्तियों को व्यर्थ वाचा में गँवाते हो ? आन्तरिक ईश्वरीय सुख को भूल, वाचा के वाह्य सुख से सन्तुष्ट रहना चाहते हो। यह बहुत ही छोटा विचार है।

पाँचवा प्रश्न—क्या तुम्हें सम्पूर्ण निश्चय है कि बिगड़ी को बनाने वाला शिव परमात्मा हमारा परम मित्र है·····यदि हाँ·····तो तुम क्यों जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं में उलझ कर परेशान होते हो···?

वास्तव में तुम तो बेगम पुर के बादशाह हो। भक्तों के भी दुख हरने वाले भगवान को पाकर भी तुम चिन्तित !!

सबके कारज संवारने वाले भोलेनाथ को पाकर भी तुम उलझन में !!!

यह तुम्हें शोभा नहीं देता।

तुम शिव बाबा की याद में रहो तो वो स्वयं ही तुम्हारी सम्भाल करेगा।

□

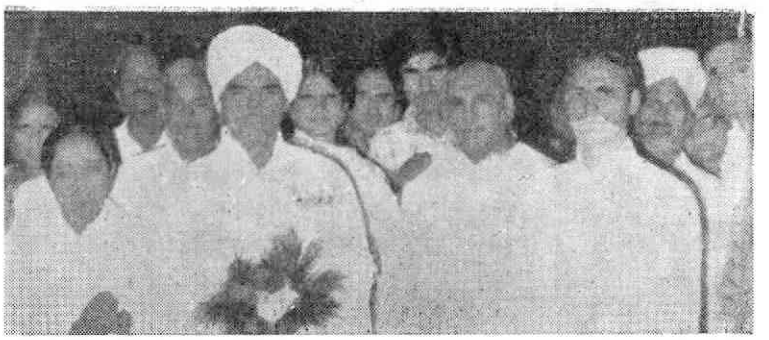

यह चित्र करनाल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् करनाल कांग्रेस के जनरल सैक्रेटरी भ्राता वेदपाल वहां के बहन भाई के साथ खड़े हैं।

नीचे के चित्र में पहाड़गंज (नई दिल्ली) सेवा केन्द्र द्वारा खन्ना सिनेमा के पीछे आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर निगम सदस्य भ्राता रंजीतराय शर्मा टेप काट कर कर रहे हैं।

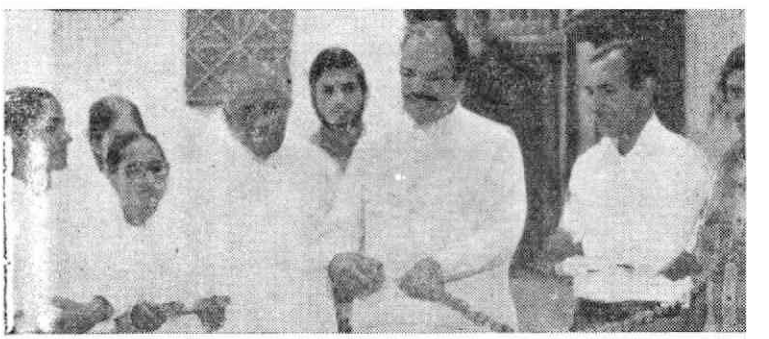

नीचे के चित्र में आस्ट्रेलिया से पधारी हुई ब्र० कु० निर्मला जी बलसार के रोटरी क्लब में प्रवचन कर रही हैं। मंच पर रोटरी क्लब के प्रधान एवं सचिव बैठे हैं।

नीचे के चित्र में ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी कोननगर (कलकत्ता) में आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ शिव ध्वजारोहण द्वारा कर रही हैं। साथ में वहां के बहन भाई खड़े हैं।

←इस चित्र में कलकत्ता सेवा-केन्द्र द्वारा श्रीरामपुर में आयोजित प्रदर्शनी में वहां के जमींदार भ्राता लखीचन्द प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० बिन्दु, ब्यानी जी एवं बैजनाथ भाई बैठे हैं।

यह चित्र सूरत में आयोजित "वकील स्नेह मिलन" में ब्र० कु० लता सम्मेलन का उद्देश्यता रही है। मंच पर मुख्य अतिथी बी० ए० पटेल सेशन जज भ्राता आर० एल० गुप्ता तथा अन्य बहन भाई बैठे हैं।

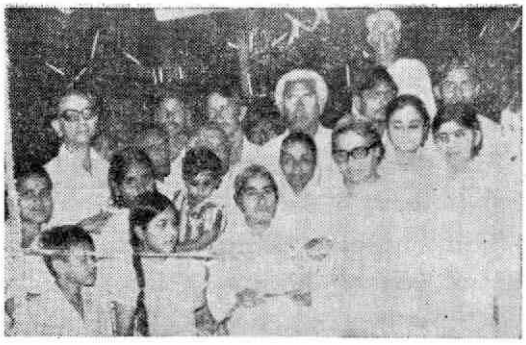

यह चित्र जोधपुर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। चित्र में ब्र० कु० निर्मला जी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही हैं। साथ में वहां के बहन भाई खड़े हैं।

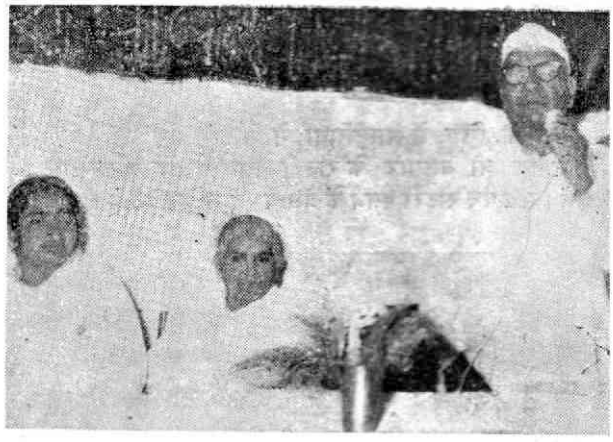

यह चित्र मेरठ सेवा केन्द्र द्वारा मवाना में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन समारोह के अवसर का है। भूतपूर्व चेयरमैन भ्राता शीलचन्द जैन अपने विचार सुना रहे हैं।

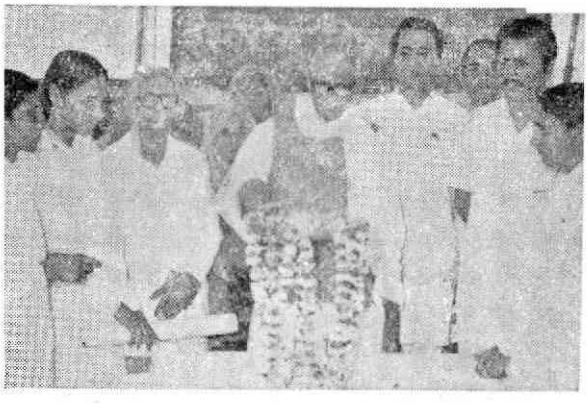

यह चित्र मथुरा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन लोकदल के भूतपूर्व विधायक भ्राता लक्खीसिंह जी कर रहे हैं। साथ में वहां के बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र बड़विल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। ब्र० कु० कुलदीप महिला समिती की बहनों के साथ खड़ी हैं।

यह चित्र सहारनपुर में नव-विश्व आध्यात्मिक मेला तथा रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर शहर के प्रमुख भागों से निकाली गई विशाल शोभा यात्रा एवं दिव्य झांकियों का है।

यह चित्र बाराबंकी में आयोजित शिवदर्शन प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। वहाँ के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भ्राता हरिहर मिश्रा प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

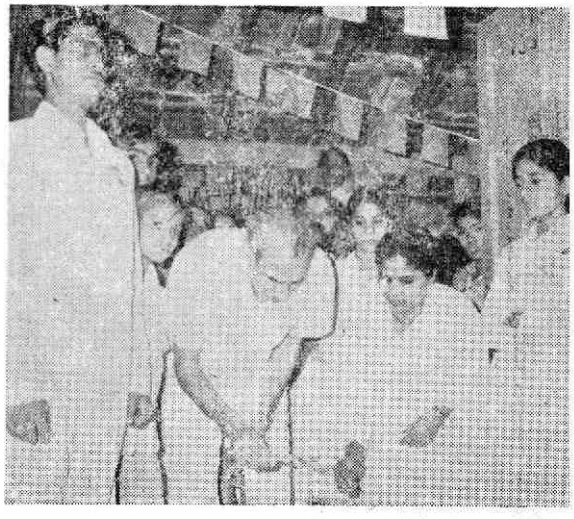

यह चित्र शेगाँव के अग्रसेन भवन में आयोजित राजयोग शिविर के उद्घाटन के अवसर का है। वहाँ के मुरारका कालेज के प्रधानाचार्य दीपक जलाकर शिविर का उद्-घाटन कर रहे हैं।

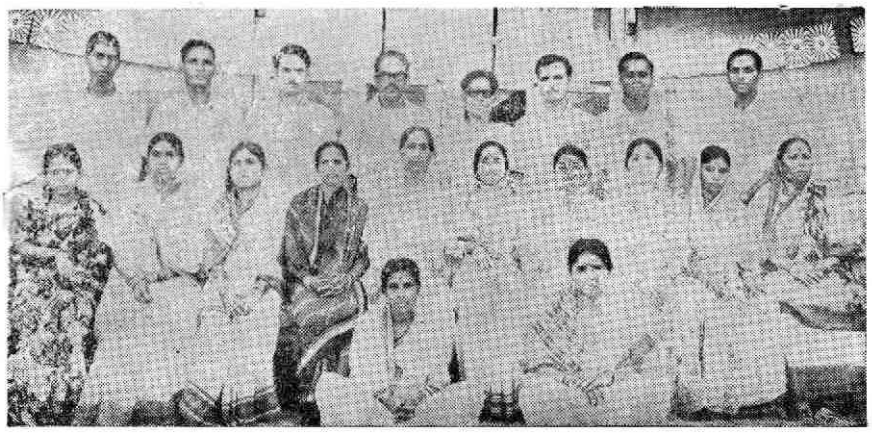

यह चित्र सम्बलपुर सेवाकेन्द्र द्वारा राऊकेला में आयोजित कार्यक्रम एवं राजयोग शिविर का है। शिविर में भाग लेने वाले भाई बहन ब्रह्मा-कुमारी बहनों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

इस चित्र में बिलासपुर में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ की सब डिविजनल मजिस्ट्रेट बहन सरोजनी गंजू टेप काटकर कर रही हैं। साथ वहाँ के बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र नडियाड सेवा केन्द्र की ओर से खेड़ा में आयोजित आध्यात्मिक मेला के अवसर का है। भ्राता चौकसी प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर डिप्टी कलेक्टर तथा वहाँ के सिविल सर्जन आदि बैठे हैं।

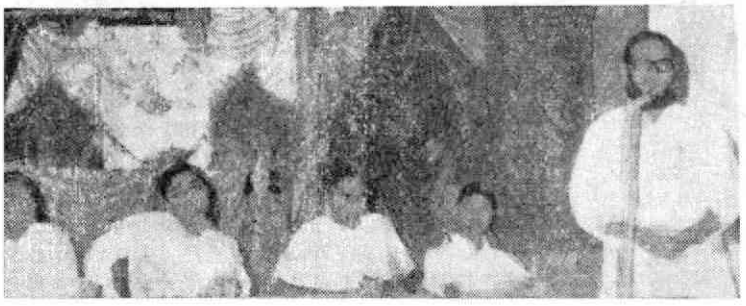

यह चित्र जूनागढ़ सेवा-केन्द्र द्वारा पानेलीमोटी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। वहाँ के समाज सेवक एवं उद्योगपति भ्राता मोहनलाल जगजीवन भालोडिया जी दीपक जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

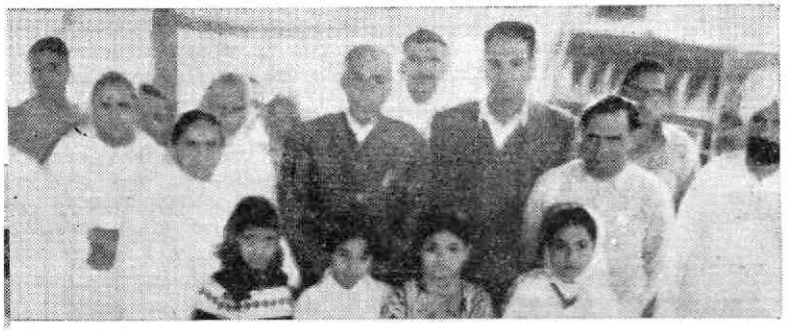

यह चित्र जालन्धर सेवा केन्द्र द्वारा नूरमहल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ की नगर पालिका के अध्यक्ष प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात वहाँ के बहन-भाइयों के साथ खड़े हैं।

इस चित्र में कंचनपाडा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के समाप्ति समारोह में प्रधानाचार्य डा० एन० सी० नन्दा प्रवचन कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० निर्मल शान्ता, रमेश भाई व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

रोज सवेरे चल पड़ता हूं साथ तेरे

ब्र० कु० देवकरण, भीलवाड़ा, राजस्थान

रोज सवेरे
तू उठाता मुझे
अमृतवेले,
और मैं
सिकीलधे बच्चे-सा
तेरी अंगुली पकड़
कभी-आकारो
तो कभी ज्योति बिन्दु-सा
चल पड़ता हुं साथ तेरे।
तू मुझे
अज्ञान के गहरे अन्धेरे में
ज्ञान का सूरज बन
राह दिखाता
इक पथ-प्रदर्शक की तरहा,
और कभी
गोद में उठा लेता
विकारों के कांटों से भरे जंगल में
मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे
रहम दिल बाप की तरहा
और,
ले जाता मुझे
पवित्रता से भरे
बेहद के गुलशन में
और बैठा अपने साथ
खुशियों के फूलों पे
सुनाता मुझे गीता-ज्ञान
मुरली की मधुर-मधुर धुनों पे
उन सुरीली तानों में
मदहोश हो मैं
योग के तार से बँधा
स्वदर्शन चक्र घुमाते-घुमाते
डूब जाता हूं
सायलेंस की रंगीन झील की गहराईयों में,
दूर·····जाने कहां·····
रोज सवेरे
जब तू
उठता है मुझे अमृतवेले।

□

तुम जलो दीप की भांति हरो जग का ये अंधकार

ले० ब्र० कु० रमेश कुमार, कुरुक्षेत्र।

है सत्य कि होता आया है,
अब तक तो तीखा तिरस्कार।
है सत्य कि छलते आये है—
अब तक तुमको ये पंच विकार
पर झुको नहीं, तुम रुको नहीं
साहस संचित कर बढे चलो,
जीते जी मरने के राही, निर्भय हो कर—
करो पवित्रता का शुभ प्रसार।
वक्षस्थल ताने सह लो,
जग के कटु-से-कटु प्रहार
तुम जलो दीप की भांति
हरो जग का ये अंधकार
ज्ञानामृत बाँट कर नित्य,
विष सब का दूर करते रहना
अपने अभाव दुःख की गाथा
मत भूल किसी से भी कहना।
श्रम, ज्ञान, योग का सिंचन कर
हर लेना जग के ये पंच विकार
मंझधारों में जो उमड़े नौका
पतवार उसी को ही देना।
अलबेलेपन को खत्म करो।
सुन शिव बाबा की ये पुकार।
तुम जलो दीप की भांति
हरो जग का ये अंधकार

सतयुग तथा कर-व्यवस्था

ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी बम्बई

हरएक व्यक्ति को अपने शरीर-निर्वाह के लिये धन खर्च करना पड़ता है और खर्च की पूर्ति के लिये धनोपार्जन भी करना पड़ता है। कमाई और खर्च अथवा आय और व्यय के अन्तर को 'बचत' कहते हैं। इसी बचत के आधार पर पूँजी का निर्माण होता है। जितनी आमदनी ज़्यादा और खर्च कम, उतनी बचत ज़्यादा। जिस तरह से एक व्यक्ति को अपने खर्च और आमदनी के लिये प्रयत्न करना पड़ता है, उसी प्रकार से वह व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसी समाज को चलाने के लिये खर्च की आवश्यकता होती है। व्यक्ति के आराम के लिये रास्ते, तालाब, कुएं आदि-आदि कई प्रकार की सुविधाएं देने के लिये एक विशेष व्यवस्था की ज़रूरत होती है और उस विशेष व्यवस्था को चलाने के लिये किसी न किसी रूप में ख़र्च की आवश्यकता होती है। इस विशेष व्यवस्था करने वाले निमित्त व्यवस्थापक को ख़र्च करने के लिये पर्याप्त धन का प्रबंध भी करना पड़ता है। इसलिये सामुदायिक कल्याणार्थ इस प्रकार के ख़र्च के लिये आय-व्यवस्था कैसे हो यह एक प्रश्न है। यदि इस ख़र्च की पूर्ति के लिये अर्थ-व्यवस्था-तंत्र द्वारा जनता पर किसी प्रकार का कर लगाया जाये तो वहाँ की जनता संपूर्ण १०० प्रतिशत सुखी नहीं है अर्थात् उस सुख में किसी प्रकार की न्यूनता मानी जायेगी। यदि इस प्रकार की कर व्यवस्था सतयुग में होगी तो उस सृष्टि में संपूर्ण १०० प्रतिशत सुख है, ऐसा कैसे माना जाए।

वर्तमान काल के वित्त व्यवस्था के प्रबंधक अर्थात अर्थशास्त्रियों की मान्यता है कि जहाँ किसी भी प्रकार की कर व्यवस्था है, वहाँ कर की मात्रा कम करने के लिये प्रयत्न ज़रूर होता है, अर्थात् कर-वसूल करने वालों और कर देने वालों के बीच संघर्ष ज़रूर होता है। इसी संघर्ष के फलस्वरूप कर-चोरी और भ्रष्टाचार आदि भी शुरू होगा। कर कितना भी कम हो लेकिन मानवी संस्कार ऐसे हैं कि जितना हो सके उतना कम कर भरने की उसकी वृत्ति होती है। इस बारे में मैं एक विदेश का उदाहरण देता हूँ। मैं एक बार जब हांगकांग गया तो वहां आय-कर १५ प्रतिशत था। तो मैंने समझा वहां कर चोरी नहीं होती होगी। लेकिन मैंने जब वहाँ के नागरिकों से पूछा तो पता चला कि पहले आय कर १० प्रतिशत था; उसे बढ़ाकर अभी १५ प्रतिशत किया था। अब आय कर में वृद्धि होने के कारण बढ़े हुए कर को मात्रा को बचाने का प्रयत्न नागरिकों द्वारा ज़रूर होगा। जब हम माऊंट-आबू जाते हैं तब हम जैसे ही आबू की सरहद में आते हैं वहाँ की नगरपालिका द्वारा यात्री-कर लगाया जाता है, परन्तु मैंने कई बार देखा है कि कई यात्री इस कर को कम देने के लिये यथा-शक्ति, यथा-संभव प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार 'कर' द्वारा धन-राशि इकट्ठा करने के प्रयास से समाज में कर-चोरी आदि का जो भ्रष्टाचार होगा उससे सतयुगी समाज कैसे बच सकेगा यह एक प्रश्न है ?

सतयुग में कर-व्यवस्था कैसी होगी ?

यदि कानून के मुताबिक कर वसूली अनिवार्य (Compulsary) न हो, अर्थात् ऐच्छिक (Optional) हो तो क्या सभी नीति-पूर्ण होकर संपूर्ण रीति से अपनी जिम्मेदारी निभायेंगे या जैसे अकबर बीरबल की कहानी में आता है, वैसे सब दूध के घड़े के बदले पानी का घड़ा डालेंगे। इसी ख्याल से कि सब तो अपना फर्ज़ अदा करेंगे ही यदि मैंने अकेले ने नहीं की तो कौन सी बड़ी बात हो जायेगी ? इसी संदर्भ में बंबई में एक बार प्रसिद्ध समाजवादी लेखक के निधन के पश्चात् उसकी प्रथम वर्षगाँठ पर एक कार्यक्रम आयोजित करने का विचार हुआ। इस कार्यक्रम के ख़र्च के बारे में यह निश्चय हुआ कि उसी दिवंगत लेखक के पुस्तकों की बिक्री द्वारा धन जमा किया जाए। इस प्रकार कार्यक्रम के समय उसी लेखक के पुस्तकों का स्टाल रखा गया और सभा में

ध्वनि-क्षेपक यंत्र द्वारा भी घोषित किया गया कि पुस्तक बिक्री का उद्देश्य उस कार्यक्रम के ख़र्च के लिये निधि जमा करना है, इसलिये जिसे जितनी भी किताब चाहिये लेकर जितना भी चाहे कम-ज़्यादा दाम दे ताकि बिक्री द्वारा कार्यक्रम का ख़र्च निकल सके। कार्यक्रम में आने वाले सभी व्यक्ति गणमान्य थे और समाजवादी विचारधारा वाले तथा दिवंगत लेखक के प्रति अति सन्मान वृत्ति वाले थे। फिर भी कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने देखा कि ६०० रु० से ज़्यादा रुपयों की पुस्तकें लोगों ने ली थीं लेकिन ७०६ रु० ही सिर्फ़ इकट्ठा हुआ था। लोगों की इस प्रकार की वृत्ति-विशेष-दर्शन का समाचार दूसरे दिन कई वर्तमानपत्रों में भी छपा था। तो प्रश्न है कि यदि ऐच्छिक (Optional) रूप में कर रखा जाता है तो क्या लोग उचित रकम देंगे ?

सारा आधार वृत्ति पर है

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट है कि यह सभी बातें व्यक्ति की वृत्ति अनुसार होती हैं। शिव पिता परमात्मा इसी वृत्ति और विचार में परिवर्तन करने आते हैं। वृत्ति और विचार के परिवर्तन के आधार पर, अर्थात् उसके तमोप्रधानता को सतोप्रधानता में परिवर्तन करने का दिव्य परिवर्तन परमपिता परमात्मा करते हैं। जब तक यह वृत्ति परिवर्तन नहीं होगी, मनुष्य कितने भी धनवान हों फिर भी प्रायः कर चोरी आदि का भ्रष्टाचार ज़रूर करेंगे ; दूसरी बात यह है कि समाज को तो समाज के रूप में चलना होता है, सतयुगी समाज व्यवस्था कोई कल्पना नहीं है। जैसे वहाँ पर भोजन के समय पर भूख लगी—इसका अर्थ यह नहीं कि दुःख हुआ बल्कि इसका यह अर्थ है कि भोजन के समय पर भूख उत्पन्न हुई, परन्तु गरीबी आदि के कारण भोजन न मिले तो कहेंगे कि दुःख हुआ, ऐसे ही वहाँ पर जन्म-मृत्यु आदि भी हैं। सिर्फ़ फ़र्क इतना है कि अकाले मृत्यु नहीं और आयु लंबी है और इस लंबी आयु में किसी भी प्रकार के रोग की व्यथा नहीं है। 'समाज' शब्द का अर्थ ही है 'सरति इति समाज' अर्थात् जो परिवर्तन-शील है वही समाज है। इसलिए सतयुगी समाज जड़ नहीं परन्तु चेतन समाज है और उसी समाज के अन्दर सब की सतोप्रधान वृत्ति है—जिस सतोप्रधान वृत्ति के संस्कार के बीज इस संगम युग में परमपिता परमात्मा सभी सतयुगी, लायक बच्चों के अन्दर डाल रहे हैं।

स्वेच्छा से दान

इस सतयुगी सतोप्रधान वृत्ति का चेतन उदाहरण शिव पिता परमात्मा द्वारा स्थापित यह विश्व-विद्यालय है। हर एक व्यक्ति जब पहली बार इस विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आता है तो उसका यही प्रश्न होता है कि यहाँ पर प्रवेश शुल्क क्या होगा या तो मासिक फीस कितनी होगी ? यह प्रश्न स्वभाविक है क्योंकि दुनिया की हरएक संस्था में उसका खर्च चलाने के लिये इस प्रकार के आय की विधि निर्धारित की जाती है। तो दुनिया के अनुभव के आधार पर ही उस व्यक्ति में ऐसा प्रश्न उत्पन्न होता है। परन्तु यह तो सबको विदित है कि इस विश्व-विद्यालय का कारोबार एक दैवी परिवार के संबंध से चलना है और यहाँ पर किसी भी प्रकार का शुल्क या चंदा इकट्ठा नहीं किया जाता। जैसे आमतौर पर सभी जगह पर होता है। फिर भी यह विश्व-विद्यालय पिछले ४० वर्षों से व्यवस्थित रूप से चल रहा है। यहाँ हरएक व्यक्ति एक दैवी परिवार के सदस्य के नाते से अपनी स्वेच्छानुसार योगदान देता है उसमें दूध या पानी के घड़े की बात नहीं, पानी का घड़ा अर्थात् अपनी योग्यता और शक्ति से कोई कम नहीं देता, अर्थात् यथाशक्ति सेवा में तन-मन-धन से सब सहयोगी बनते हैं। यह प्रयोग सिर्फ़ भारत में ही नहीं लेकिन विश्व के सभी कोनों में सफ़लतापूर्वक शिव बाबा ने प्रत्यक्ष करके दिखाया है। अर्थ-शास्त्रियों के लिये यह बात एक कुतूहल और प्रश्न उत्पन्न करती है क्योंकि दुनिया में ऐच्छिक रूप में अपनी फ़र्ज़ अदाई करने वाले और उसके आधार पर संस्था को चलाने वाले बहुत कम होते हैं।

शिव बाबा द्वारा प्रस्थापित यह ऐच्छिकी सिद्धांत में किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष उत्पन्न नहीं होता क्योंकि हरएक अपना भाग्य बनाने अर्थ खर्च के अन्दर अपनी यथा शक्ति अंगुली देता है और यही सिद्धान्त बीज के रूप में दुनिया के सभी धर्म-संस्थाओं में गया है। सतयुग में धर्म सत्ता और

राज्य सत्ता एक ही हाथ में होने के कारण और राज्य सत्ता धर्म के आधार पर चलने के कारण समाज के सभी व्यक्ति राज्य-व्यवस्था को चलाने की अपनी ज़िम्मेदारी समझ करके पूर्णतः अपनी ज़िम्मेदारी अदा करते थे। जब धर्म सत्ता और राज्यसत्ता अलग हुई तब भी धर्मसत्ताएं अर्थात् धर्म-संस्थाओं को चलाने के लिए किसी भी प्रकार के शुल्क की व्यवस्था नहीं थी। हमारे सेवा केन्द्रों पर प्रस्थापित शिक्षा-कोष रूपी कल्प पहले के संस्कार का प्रतीक (Symbol) आज भी सभी मंदिरों आदि में दान-पेटी के रूप में चला आता है। आज के तमो-प्रधान वृत्ति के समाज में भी सभी धर्मों के मंदिर आदि ऐच्छिक दान के आधार पर ही चलते हैं। थोड़े समय पहिले मैं दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थान तिरुपति को गया था, वहाँ पर भी दान-हुंडी में सभी ऐच्छिक रूप में दान भरते थे। देने वाले के मुख पर किसी भी प्रकार का दुःख का आभास नहीं था लेकिन देने से मिलने के सुख का आभास था। जैसे माँ अपने बच्चे को खाना खिलाती है तो उसे अपना खाना कम होने का दुःख नहीं होता परन्तु बच्चे को खाना खिलाने का सुख उसके मुख पर दिखाई देता है, ऐसे ही उनके मुख पर धन दान का सुख दिखाई पड़ता था।

एक उदाहरण

इस प्रकार तमोप्रधान वृत्ति से सतोप्रधान वृत्ति का एक उदाहरण मैंने बंबई में १५-१६ साल पहले अनुभव किया। उस समय बंबई के सेवा केन्द्र पर बैंक में चपरासी का काम करने वाला एक व्यक्ति ज्ञान लेने के लिए आता था। तीन-चार मास तक नियमित रूप से ज्ञानार्जन करने के पश्चात् उस व्यक्ति ने सेवा केन्द्र संचालिका बहन को ९० रु० देकर सेवाकेन्द्र में सहयोगी बनने की इच्छा प्रदर्शित की। बहनजी द्वारा मना करने पर वह व्यक्ति मेरे पास आया क्योंकि मैं उसको सप्ताह कोर्स कराने के निमित्त बना था। मुझे उस व्यक्ति ने बताया कि बहनजी समझती हैं कि मेरी आमदनी कम है, इस-लिए मुझे मेरी आमदनी लौकिक परिवार के सुख के अर्थ-खर्च करनी चाहिए। मैंने कहा बहनजी का कहना बिलकुल ठीक है क्योंकि आपकी मासिक तनख्वाह १२८ रु० है और उसमें आपको अपना पत्नी और ४ बच्चों का उदर निर्वाह करना है जो दैवी परिवार के सदस्य के नाते से आपके परिवार का भी ध्यान रखना जरूरी है। तब उस व्यक्ति ने मुझे समझाया कि यद्यपि मेरा मासिक वेतन १२८ रु० है लेकिन दूसरे कार्य आदि के द्वारा मास में अन्य २५-३० रु० मिल जाते हैं। अज्ञान काल में मेरा मासिक जेब खर्च, बीड़ी, पान, तम्बाखू होटल, सिनेमा इत्यादि पर ३०-३५ रु० होता था। आज शिव बाबा के इस ज्ञान के आधार पर उस ३०-३५ की बचत हो गई और उन्हीं पैसों से पहली बार मैंने बच्चों के लिये १० रु० का सच्चा घी खरीदा, १० रु० बैंक में जमा किये और १० रु०, जिस ईश्वरीय शिक्षा के आधार पर यह जीवन परिवर्तन हुआ, उसी ईश्वरीय बैंक में जमा करता हूँ। इसलिये इन १० रुपये से मेरे परि-वार को कोई भी दुख नहीं होने वाला है (कई पूछते हैं कि आपके विश्वविद्यालय द्वारा कौन सी समाज सेवा होती है। उसके जवाब में उपर्युक्त व्यक्ति का ज्वलंत उदाहरण है कि ज्ञान सेवा के साथ-साथ समाज सेवा आदि स्वतः ही होती है) उस व्यक्ति का ज्ञान के आधार पर सिगरेट आदि का व्यसन छूट गया उसके परिवार को पहली बार सच्चे घी का स्वाद मिला—क्या यह सच्ची समाज सेवा नहीं है) इस तरह से उस व्यक्ति को १० रु० देने में कोई दुःख नहीं था, बल्कि उसके सुख की मात्रा में जो वृद्धि हुई वह वृद्धि अर्थशास्त्र के किसी भी मापदंड से मापी नहीं जा सकती, थोड़ा देने से अनेक गुण खुशी होती है। इसलिये देना दुख नहीं लेकिन सुख है। यह कल्पना आज के अर्थशास्त्रियों को बतानी पड़ेगी।

इस तरह से अपनी धन-संपत्ति समाज व्यवस्था अर्थ व्यवस्था करने वालों के साथ बंटाना (Share) यह भी एक संस्कार है। इस समय शिव बाबा हम बच्चों में यह संस्कार भर रहे हैं जिसके आधार पर सत-त्रेता युग में अपनी धन संपत्ति ऐच्छिक रूप से समाज के साथ में बटाना शक्य होगा, अर्थात् हमारे ज्ञान के आधार पर कई विधियां इस समय प्रवृत्त हैं इन विधियों से सतयुग की विधि का विधान स्पष्ट होता है।

इसी तरह मधुबन से जब हम आत्माएं विदाई

लेती हैं तब उस बिदाई के साथ सौगात मिलती है। सौगात लेना और देना यह भी संस्कार बनता है। इसलिए सेवा के अर्थ लेना-देना सौगात के रूप में होगा तो उससे मन में कोई भी प्रकार की दुःख की प्रक्रिया नहीं होगी इसलिये सौगात की बात को भी समझना बहुत ज़रूरी है क्योंकि सौगात के रूप में लेन-देन करने के संस्कार बहुत ही सूक्ष्म रूप से हमें अपनी स्थूल धन-संपत्ति को औरों के साथ लेने-देने के काम में आते हैं। इसी सौगात की लेन-देन का यादगार अभी तक है अभी तक शादियों आदि शुभ प्रसंग पर अभी भी सौगात देते लेते हैं जिससे शादी का खर्च आदि बट जाए। सौगात द्वारा इस तरह समाजवाद अर्थात् सामाजिक उत्तरदायित्व में हाथ बँटाने का (Sharing social responsibility) संस्कार भरना यह भी बहुत सूक्ष्म बात है और इसके आधार पर हमारी सतयुग की सुचारु रूप से वित्त-व्यवस्था चले उसकी नींव अभी पड़ती है।

एक बात और भी ध्यान में रखने की है कि सतयुग में अखुट धन-संपत्ति है जब धन संपत्ति सीमित (Limited) है अर्थात् जब देने से धन-संपत्ति खुटती है ऐसा लगता है, तब ही उस धन-संपत्ति का औरों से बटाने (Shore) का दुख होता है परंतु जब अखुट धन-संपत्ति अर्थात् जैसे कि शिव बाबा ने बताया कि प्रजा के पास भी उनकी आवश्यकता से भी कई गुना ज्यादा धन संपत्ति होगी तब प्रजा को भी अपनी धन-संपत्ति औरों के साथ बँटाने की जरूरत पड़ी तो उसे दुख नहीं होगा और प्रजा अपना अधिक उत्पादन औरों के साथ में अपने माल का अदल-बदल (Exchange) कर सकेगी। ऐसे ही जब अपनी लौकिक जिम्मेवारी बड़ी होती है तब धन-संपत्ति का संग्रह करना ज़रूरी माना जाता है। परन्तु जब वहाँ एक ही बच्चा और बच्ची होती हैं, जब अकाले मृत्यु नहीं, जब आमदनी का स्रोत अखुट है और हीरे-जवाहरात आदि पाई पैसे के मूल्य से मिलते हैं, जब सोने-चांदी आदि के महल बने होते हैं, जब धन का आज के संपत्ति के रूप में जितना मूल्य हैं उतना नहीं होगा, तब वहाँ की वित्त-व्यवस्था की कोई जटिल समस्या नहीं होगी। उसी तरह से धन के प्रति देखने का दृष्टि कोण भी अलग होगा। जैसे आज भारत में बचत की नीति अपनाई जाती है अर्थात् जितनी ज़्यादा बचत होगी उतनी ज़्यादा अर्थ व्यवस्था अच्छी होगी, ऐसा माना जाता है। पश्चिम की दुनिया में अर्थ-व्यवस्था का मापदंड है ख़र्च, जितना ज़्यादा ख़र्च होगा उतनी अर्थनीति (Economy) मज़बूत बनेगी और इसी कारण वहाँ सरकार ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करने की योजना देती है। इसी तरह से सतयुग की अर्थ व्यवस्था का मापदंड धन-संचय नहीं परन्तु आपस में पारस्परिक स्नेह, सहयोग और समान अधिकार है। एक परिवार का रूप जो अभी परमपिता परमात्मा ने संस्कार के रूप में भरा हैं है उसी दृष्टिकोण से वहाँ पर भी राज्य व्यवस्था का कारोबार चलता है। इसलिए जैसे आज भी परिवार के लिये धन-संपत्ति के बटाने में दुःख नहीं, सुख माना जाता है, ऐसे सतयुग की दुनिया में भी राज्य-संचालन करने वालों को अपने अंग माने जाएंगे। उसी कारण उस अंगीभूत व्यवस्था के संचालन में मददगार बनने में कोई दुःख नहीं होगा। इसलिये सतयुगी सृष्टि की सभी प्रकार की व्यवस्थाओं को समझने का विशेष दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। यदि एक बार यह दृष्टिकोण बिंदु बुद्धि में बैठ जाए, तब ही उसकी रोमांचकता, उत्सुकता, और सफ़लता का सबको साक्षात्कार होगा। सतयुग परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना है तो परमात्मा के दृष्टिकोण से उसको देखने में जो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा, उसे आज के तमोप्रधान दुनिया के वृत्ति और विचार के आधार पर समझना कठिन होगा। इसलिए इस दृष्टि बिंदु का फर्क जितने जल्दी खतम होगा उतना ही उसे अच्छी तरह समझ सकेंगे।

जैसे सतयुगी सृष्टि में जन्म आदि के बारे में विशेष व्यवस्था है और उसी व्यवस्था को आज की दुनियाँ की बातों के आधार पर सामान्य व्यक्ति को समझना मुश्किल है क्योंकि सतयुग में देवताएं मायाजीत, प्रकृतिजीत होते हैं और इसी कारण वहाँ की जन्म-व्यवस्था अलग है, वहाँ गर्भमहल है और विकार-रहित जन्म है, उसी तरीके से सतयुग में विकार-रहित वित्त-व्यवस्था अर्थात् आर्थिक व्यवस्था है—इस आर्थिक व्यवस्था की दिव्यता को समझने के लिये दिव्य-बुद्धि की आवश्यकता होगी। यदि यह दिव्य-बुद्धि का दर्पण मिल जाए तो सतयुग यह कल्पना नहीं बल्कि सत्यता ही लगेगा। ●

स्वधर्म की पहचान

लेखक—बी० के० मोहनलाल (अमृतसर)

ड्रामा

पात्र सूची—

1. अध्यापक
2. विद्यार्थी—सुरेश, अमीन, बन्टू, संजीव, मिन्टू
3. एक परिवार, जिसमें मम्मी और आया
4. एक ब्रह्माकुमार और एक ब्रह्मा कुमारी।

(पर्दा खुलता है। सुरेश और उनकी मम्मी बैठे हुए हैं। और उनकी मम्मी सुरेश को बुलाती हुई)

मम्मी—सुरेश—सुरेश ! बेटा, तू अभी तक तैयार नहीं हुआ ? देख तेरे स्कूल का टाइम हो गया है।

सुरेश—हाँ मम्मी, मैं अभी तैयार होता हूँ।

मम्मी—सुन, तुझे स्कूल में ठीक तरह पढ़ाया जाता है ना ? तेरा अध्यापक कैसे पढ़ाता है ?

सुरेश—मम्मी, हमारे मास्टर जी तो इतने अच्छे हैं कि बात मत पूछो। मम्मी वह सब बच्चों को इतना प्यार करते हैं जैसे मां-बाप अपने बच्चों को करते हैं।

मम्मी—अच्छा फिर तो बहुत अच्छी बात है। आज तेरे पिताजी ऑफ़िस जाते समय पूछ रहे थे सुरेश स्कूल में ठीक पढ़ता है ? वह खुश तो है ना ?

सुरेश—हाँ, मम्मी मैं बहुत खुश हूँ। हमारे मास्टरजी रोज एक बात समझाते हैं कि आपस में सबको प्यार करना चाहिये।

मम्मी—अच्छा ऐसे हैं तेरे मास्टरजी ! फिर तो वह बहुत अच्छे हैं। जो ऐसी शिक्षा देते हैं। हाँ, बेटा, सबसे प्यार से ही रहना चाहिये।

(बाहर से आवाज़ आती है स्कूल जाने वाले लड़कों की। "सुरेश—सुरेश !")

सुरेश—कौन, बन्टू, ओह ! स्कूल का टाईम हो गया। मम्मी, मैं जाता हूँ। (साथ ही उसको आवाज़ देता है) तुं ठहर मैं अभी आया·····(सुरेश स्कूल चला जाता है)

पर्दा बन्द हो जाता है।

दृश्य दूसरा—पर्दा खुलता है

(सुरेश और चार-पाँच लड़के अपने घर में ले आता है। उसकी मम्मी घर में नहीं है। नौकरानी ही होती है)

सुरेश—आया ! मम्मी कहाँ है ?

आया—बाज़ार में गयी है कुछ सामान आदि लेने के लिये।

सुरेश—अच्छा जब तक मम्मी आये अमीन, बन्टू आओ, हम बैठें तब तक। आप मम्मी से मिलकर जाना। पता है, मेरी मम्मी बहुत अच्छी है। आप उन्हें मिलकर बहुत खुश हो जायेंगे।

बन्टू—नां-भई-नां, मेरे घर वाले तो मुझे बहुत डाँटेंगे। मैं जब भी लेट जाता हूँ मुझे बहुत डाँट पड़ती है।

अमीन—(सुरेश, संजीव मिलकर) कोई बात नहीं, थोड़ी देर ठहर जाओ, कुछ नहीं होता।

मिन्टू—हाँ, हाँ, कह देना कि स्कूल में ही देर हो गई थी·····

संजीव—आओ तब तक हम खेलते हैं, जब तक सुरेश की मम्मी आये।

सुरेश—हाँ, हाँ, हम खेलते हैं। मेरी मम्मी कहती थी कि सबसे प्यार से ही रहना चाहिये।

(सब खेलने लग जाते हैं सुरेश की मम्मी आ जाती है और देखती है कि कोई सोफे पर खेल रहा है कोई पलंग पर कोई मेज पर)

मम्मी—(सुरेश को डाँटते हुए) यह क्या हो रहा है ? यह सब कौन हैं ? यह क्या ! सारा घर खराब कर रहे हो ?

सुरेश—यह सब मेरे साथ ही पढ़ते हैं। सब बहुत अच्छे हैं।

मम्मी—कान खोल कर सुन ले ! आज के बाद तू ऐसे लड़कों को साथ लाया तो देखना तेरा क्या

हाल करूँगी ! (डाँट सुनते ही एक-एक लड़का जाने लगता है)

सुरेश—मम्मी, आपने तो कहा था कि सबसे प्यार से रहना चाहिये।

मम्मी—(तीखी आवाज़ से) मैंने ये कहाँ कहा था कि जिस-किसी को भी घर में ले आओ। न किसी की जात न पात जाने और हर जात वाले से खेलते रहो।

सुरेश—मम्मी, ज़ात-पात क्या होती है ?

मम्मी—लो अब तक इसे यह भी पता नहीं कि हम ब्राह्मण हैं। सुन तुझे समझाऊँ ! ब्राह्मण होते हैं सबसे ऊँचे। दूसरी जाति वालों से खेलना हमें शोभता नहीं। वह कोई मुसलमान कोई हरिजन, कोई इसाई, हम भला उनके साथ कैसे बैठ सकते है ?

सुरेश—मम्मी, मुसलमान और हरिजन कौन होते हैं ?

मम्मी—तू बहुत ही भोला है। यह भी नहीं जानता। हमारे बड़ों ने समझाया है कि हिन्दू धर्म वालों के सिवाय अन्य किसी भी धर्म वाले से लेन-देन नहीं रखा जाता।

(सुरेश माथे पर हाथ रख सोचते हुये)

सुरेश—अच्छा तो मम्मी आप मुझे बता दो किस-किस धर्म वालों से सम्बन्ध न रखूँ ?

मम्मी—सुन, वह जो सोफ़े पर लड़का बैठा था वह हरिजनों का लड़का था। जो पलंग पर था, वह मुसलमानों का था। तीसरा ईसाइयों का था। इन सब में से हमारी जात वाला कोई भी नहीं। हमारा सम्बन्ध सिर्फ़ हिन्दू धर्म वालों से है।

(यह कहकर सुरेश की मम्मी दूसरी ओर चली जाती है। सुरेश सोचते हुए और अपने से बातें करते हुए)

सुरेश—तो इसका मतलब यह हुआ कि जितने भी साथी हैं, इन्हें अब छोड़ना पड़ेगा। कल से स्कूल में भी उनके साथ नहीं बैठना चाहिये।

पर्दा गिरता है।

दृश्य तीसरा

(स्कूल में लड़के क्लास में बैठे हुए हैं। सुरेश एक-एक से पूछता है कि आप किस जाती के हो ?)

सुरेश—मिन्टू, आप किस जाति के हैं ?

मिन्टू—क्यों आज आते ही यह क्या पूछ रहे हो ? हम तो हरिजन हैं।

सुरेश—(अमीन से) आप किस धर्म के हो ?

अमीन—मैं तो मुसलमान हूँ।

सुरेश—(तीसरे से) कौन हो ?

बन्टू—मैं तो ईसाई हूँ।

सुरेश—इसका मतलब यह है कि इनमें से किसी के साथ भी मुझे नही बैठना है।

(इतने में अध्यापक आ जाता है)

सुरेश—(अध्यापक से) मास्टरजी मुझे इन लड़कों के साथ नहीं बैठना है। मुझे अलग जगह चाहिये।

अध्यापक—सुरेश ! यह कैसी बातें करते हो। स्कूल में तो सब इकट्ठे ही बैठते हैं। किसी के लिये अलग जगह नहीं होती।

सुरेश—मेरी मम्मी ने कहा था कि आप किसी हिन्दू जाति के सिवाय किसी दूसरी जाति वाले के साथ न बैठना।

(इतने में एक ब्रह्माकुमार, बी० के० कुमारी आती हैं मास्टरजी से बात करते हैं।)

ब्रह्माकुमार—नमस्ते, मास्टरजी।

अध्यापक—नमस्ते, नमस्ते। आइये बैठिये। आप भी बहन जी ! आइये कैसे आना हुआ ?

ब्रह्माकुमार—हम ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से आये हैं बाल वर्ष पर हमारा खास सब बच्चों को ऊँचा मार्ग दिखाने के लिये सब स्कूलों में ज्ञान का कार्यक्रम रखा जाता है। हमने अब तक बहुत-से कार्य-क्रम स्कूलों में किये हैं। जिससे हमने देखा है कि ज्ञान की बातें सुन कर बच्चों में बहुत सुधार हो जाता है।

अध्यापक—यह तो बहुत अच्छी बात है ! आप बहुत अच्छा कार्य करते हैं। बच्चों को ज्ञान की बातें तो सुनानी चाहियें। देखो, आज ही एक बच्चा यह कह रहा था कि मेरी मम्मी कहती है कि दूसरे धर्म वाले के साथ बैठना भी नहीं चाहिये।

ब्रह्माकुमार—हाँ यही तो हम बताते हैं कि देह के धर्म सब एक-दूसरे से दूर करने वाले हैं। हम

चाहते हैं कि आप स्कूल में एक प्रोग्राम रखें ताकि क्लास के बच्चों को इस बारे में अच्छी तरह समझाया जाये।

अध्यापक—किसी दिन क्या, आज ही बच्चों को सुनाइये। उसके लिये जो प्रबन्ध कहो मैं कर देता हूँ।

ब्रह्माकुमार—प्रबन्ध तो हमें कोई खास नहीं चाहिये। बहिनजी ज्ञान की बातें सुनायेंगी और बच्चे सुनेंगे।

अध्यापक—अच्छा तो बहिनजी आप सुनाइये। (मास्टरजी बच्चों से कहते हैं।) बच्चो, यह बहन जी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से आई हैं और आप को ज्ञान की बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनायेंगी। सुनेंगे नां?

सब बच्चे—ज़रूर सुनेंगे।

ब्रह्माकुमारी—बच्चो, आपको पता है कि आप सब कौन हैं? हम सब आत्मा हैं। शरीर नहीं और हमारा धर्म भी एक है। आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। हम सब का पिता भी एक है। उनका नाम है शिव परमात्मा। हम सबका घर भी एक है। हमारा घर है—परमधाम। हम सबका रूप भी एक है। ज्योति-बिन्दू। हमें किसी से भी नफ़रत नहीं करनी चाहिये। न ही किसी की देह को देखना है। न ही किसी के देह के धर्म को देखना है। (सुरेश बीच में ही बोल पड़ता है।)

सुरेश—चाहे कोई किसी भी धर्म का हो। चाहे वो हरिजन हो?

ब्रह्माकुमारी—अरे भाई! हम सब आत्माएं हैं। हरि के जन ही तो सभी हैं।

सुरेश—ना-ना मैं तो हरिजन नहीं हूँ। मैं तो ब्राह्मण हूँ। मेरी मम्मी कहती है कि हम ब्राह्मण हैं, फिर हम हरिजन कैसे हैं।

ब्रह्माकुमारी—भाई, 'हरिजन माना हरि के जन। 'हरी है परमात्मा। जन हैं बच्चे। आज से सब प्रतिज्ञा करो कि हम सब न किसी से लड़ेंगे न किसी की देह को देखेंगे। आपस में सब प्यार से रहेंगे।

सुरेश—बहिनजी, आप कितनी अच्छी बातें सुनाती हैं। मैं आज प्रतिज्ञा करता हूँ कि किसी के भी देह धर्म को नहीं देखूंगा। मैं सदा 'स्वधर्म में रहूँगा।

मिन्टू—हम सभी एक पिता के बच्चे हैं तो आज से हम सभी मिलकर रहेंगे।

(सभी मिलकर एक-साथ बोलते हैं)

सभी—हां, हां बहिन जी आप ने जो सुनाया है, आज से हम वैसे ही चलेंगे।

मुकेश—चलो हम सभी बहिनजी के सामने पक्की प्रतिज्ञा करते हैं।

(सभी मिलकर प्रतिज्ञा का गीत गाते हैं)

गीत

(तर्ज)—दुनिया नई बनाने का यहाँ हमने नक्शा देख लिया।

(स्थाई)—देह के धर्मों को अब छोड़ो
इसे नहीं अपनाना है।
हम सभी हैं भाई-भाई
सबको यह समझाना है।
देह के धर्मों.....

एक पिता के हैं हम बच्चे, एक कुल के भाती हैं।
एक ही है स्वधर्म हमारा, एक ही घर के वासी हैं।
एकता वाला पाठ हमें अब, औरों को पढ़ाना है।
देह के धर्मों.....

हम बनेंगे प्यार के सागर, सबको प्यार सिखायेंगे।
अपने कर्मों के द्वारा हम, जग को स्वर्ग बनायेंगे।
देवता बनना लक्ष्य हमारा, सबको देव बनाना है।
देह के धर्मों.....

बन कर के हम ज्ञान का सूरज, दुनियां को चमकायेंगे।
चन्दा सा बन करके शीतल, शीतलता बरसायेंगे।
सर्व गुणों से भर कर झोली, औरों को लुटाना है।
देह के धर्मों.....

पर्दा गिरता है।

□

दस सूत्री कार्यक्रम की सफलता से ही विश्व-कल्याणकारी महायज्ञ की सफलता

ले० आत्मप्रकाश कृष्ण नगर, दिल्ली

मेरा कई वर्षों से यह संकल्प चलता था कि देहली की सर्विस कैसे बढ़े, अर्थात क्लासों में विद्यार्थियों की संख्या की वृद्धि कैसे हो ? हम आध्यात्मिक प्रदर्शनियाँ करते हैं, मेले करते हैं, सम्मेलन भी करते हैं परन्तु वहाँ जितने भी लोग आते हैं, उनमें से थोड़े ही लोग ऐसे होते हैं जो अधिक रुचि दिखाते हैं और कार्यक्रम के पश्चात प्रतिदिन क्लास में आना चालू करने वालों की संख्या तो उनसे भी कम होती है। यदि कुछ विद्यार्थी आना शुरू भी करते हैं तो कुछ दिनों के बाद गायब हो जाते हैं। मैं कई बार यह प्रश्न बड़े भाई-बहनों से करता था और जवाब मिलता था कि यहाँ की धरणी ही कुछ ऐसी है। वास्तव में यह बात ठीक भी है। आबू मुख्यालय से हम जितना दक्षिण की ओर जाते हैं अर्थात गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक आदि में धरती ज़्यादा उपजाऊ दिखाई देती है। मैंने स्वय देखा कि वहाँ के लोग ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का निमन्त्रण पाकर अपने धन्य-भाग्य मानते हैं और मासूस करते हैं कि निमन्त्रण भेज कर उन पर कृपा की गई है परन्तु आबू के उत्तर की ओर के लोगों को यदि निमन्त्रण दिया जाए तो वे आते हैं मानों वे हम पर कृपा कर रहे हैं।

इस बात को देखते हुए मेरे मन में बहुत विचार चलता था कि देहली की धरणी ठीक कैसे हो ? मैं सोचता था कि ऐसा कोई अभियान चले जिससे कि हमारे विश्व-विद्यालय के प्रति अभी तक भी कुछ लोगों में भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं, वे ठीक हों ताकि लोग ईश्वरीय ज्ञान को ध्यान से सुनें तो सही और उनको मालूम तो पड़े कि हम रूहानी ब्राह्मण कितने बड़े कार्य में लगे हुए हैं।

मेरे मन में दूसरा प्रश्न चलता था कि हम आध्यात्मिक कार्य में लगे हुए हैं परन्तु आम तौर पर गवर्मेन्ट चाहती है कि कोई सोशल अर्थात सामाजिक कार्य हो। कई लोग हम से पूछते थे कि इस आध्यात्मिक प्रचार से समाज से बुराइयाँ दूर कैसे होंगी ?

इन दोनों का हल आख़िर बाबा ने सुझा ही दिया है। वह है दस सूत्री कार्यक्रम जो कि १ मई से शुरू हो रहा है। मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि यदि हम सभी रूहानी ब्राह्मण इकट्ठे होकर, कन्धे से कन्धा मिलाकर इस अभियान को अपने सम्पूर्ण प्रयत्न से चलायें तो विश्व-विद्यालय की प्रतिभा उज्ज्वल होकर सबके सामने आयेगी, लोगों की ग़लत फ़हमियाँ दूर होंगी, राज्यसत्ता और धर्म सत्ता के अधिकारी भी हमें सहयोग देंगे। इस दस-सूत्री महाअभियान से १९८१ में होने वाला महायज्ञ सफल होगा और इस महायज्ञ की सफलता से ऐसी योगाग्नि निकलेगी जो कलियुग को भस्मीभूत कर देगी और शीघ्र ही सतयुग आयेगा।

जब मधुबन में इस दस सूत्री कार्यक्रम की रूपरेखा बनी और जब हम मधुबन से लौट रहे थे तो गाड़ी में ही इसका आभास कि यह कार्यक्रम कितना सफल हो सकता है, उस समय मिला। हमने इस कार्यक्रम का लोगों को परिचय देकर उनसे सिग्रेट आदि छुड़ाई। लोग इस कार्यक्रम को सुनकर हर्षित होते थे कि कोई तो हमसे इन बुराइयों को छुड़वाने के लिए पैदा हुए हैं।

अब तो हमें दिन-रात यही लग्न लगी हुई है कि लोगों को किस प्रकार से बुराइयों को छोड़ने का संकल्प करायें। मैंने तो पहले ही कई परिचित लोगों से कह दिया था कि हम १ मई से महायज्ञ कर रहे हैं और आपसे कुछ-न-कुछ आहुति डलवानी है। वे कहते थे—"हम अवश्य सहयोगी बनेंगे।" जब मैं उनको कहता था कि परमात्मा तो 'शाहंशाहों का शहंशाह' है, वो दाता है उसको कोई पाई-पैसा नहीं चाहिए परन्तु उसके पास जो चीज़ नहीं है, परमात्मा को वही चाहिए। परमात्मा तो गुणों

का सागर है, उसे बुराई चाहिए। आप परमात्मा के लिए बुराई दान करो, इस सृष्टि पर संकट आया हुआ है, भ्रष्टाचार अत्याचार की आग लगी हुई है, सृष्टि से संकट दूर करने के लिए और शान्ति तथा प्रेम का वातावरण पैदा करने के लिए बाबा आप से ये विकारों की आहूति माँगता है। क्या आप नहीं देंगे ? वे कहते थे कि हम तो छोड़ना चाहते हैं, हम अवश्य देंगे।

अब ३-४ दिनोंसे कुछ व्यक्तियों से इस दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत जिनसे मेरी बातचीत हुई और जिनसे मैंने संकल्प कराया, वे निम्नलिखित हैं—

सबसे पहले तो हमारे यहाँ जो आर्टिस्ट (Artist) काम करते हैं, हमने उन्हें यह दस सूत्री प्रोग्राम बताया और कहा कि आप शिव बाबा का इतने वर्षों से कार्य कर रहे हैं, सारा ज्ञान आपकी बुद्धि में है, कुछ तो आप शिव बाबा की मदद करो। शिव बाबा कहते हैं कि कम-से-कम १० मास तक तो पवित्र रहो ताकि हमारा यह विश्व-कल्याण हेतु यज्ञ सफल हो। क्या आप शिव बाबा की इतनी भी मदद नहीं करेंगे? सभी ने कहा कि हम बाबा को अवश्य मदद करेंगे। हम १० मास तो अवश्य पवित्र रहेंगे।

एक फोटोग्राफर है जिनसे इस बारे में चर्चा हुई। उससे काफ़ी वार्तालाप हुआ। वह कहने लगा कि और तो सब बातें ठीक हैं परन्तु 'काम' विकार को छोड़ना मुश्किल है। मैं तो स्वयं को ब्रह्मचारी ही मानता हूं। मैं तो 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' का सिद्धान्त मानने वाला हूं, हमारे शास्त्रों में ऐसी आज्ञा है। मैंने कहा—"अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। सृष्टि पर महासंकट आया हुआ है, क्या आप दस मास तक 'काम' का दान नहीं दे सकते ?" उसने कहा कि अपनी पत्नी से बात करूँगा और योग सीखूंगा और प्रयत्न करूंगा।

एक मुद्रक से भी मेरी बात हुई और उसको कार्यक्रम से अवगत कराया। वह कई चीजों का तो परहेज़ करता ही था और कभी-कभी सेन्टर पर आता भी था। उसने पवित्र रहने का और प्रतिदिन ७ से ७.१० तक शिव बाबा की याद में रहने का वायदा किया।

एक लोहे के सामान की दुकान पर मैं किसीकाम से गया। वहाँ से कुछ सामान लेना था। सबको दस-सूत्री कार्यक्रम सुनाया तो वह आश्चर्यान्वित होकर कहने लगा, "वाह, आप लोग ऐसा कार्य कर रहे हैं।" उसने कहा, "मैं और तो सब-कुछ छोड़ सकता हूं और आप का फ़ार्म भी भरूँगा परन्तु 'काम' विकार को कैसे छोड़ूं ?" मैंने कहा कि यदि आप योग सीखें तो छूट सकता है। उसने योग सीखने का वायदा किया है।

हमारे सेवा केन्द्र पर बहुत लोग फ़ोन करने आते हैं। हम सब से दस सूत्री कार्यक्रम के बारे में बात करते हैं कि यज्ञ रच रहे हैं; इनमें बुराइयों का दान चाहिये। एक बच्चा हमारे यहाँ टेलीफ़ोन द्वारा अपने पिता को यह सूचना देने के लिए आया कि वह परीक्षा में पास (Pass) हो गया है। मैंने टेलीफ़ोन पर उसके पिता से बात की। मैंने कहा कि हम यज्ञ रच रहे हैं; उसमें आपका सहयोग चाहिए। वह थोड़ा-सा हिचका; सोचने लगा होगा कि शायद कोई आर्थिक सहयोग माँगते हैं। परन्तु उनको यह तो मालूम ही था कि ब्रह्माकुमारियाँ कभी चन्दा नहीं माँगती। जब मैंने कहा कि यह यज्ञ एक निराला यज्ञ है; इसमें जौ, तिल, घी आदि की आहुतियाँ नहीं बल्कि बुराइयों की आहुति डालनी है। हम आपसे किसी विकार की आहुति डलवायेंगे। वह बहुत खुश हुआ। कहने लगा "मैं बहुत प्रयत्न करता हूं और चाहता हूं कि ब्रह्मचर्य का पालन करूँ परन्तु प्रयत्न करने पर भी २-३ मास में ही निराश हो जाता हूं। मेरी पत्नी भी चाहती है कि हम व्रती बनें। इसके लिए कोई युक्ति बताओ।" मैंने कहा—"आप रोज़ १०-१५ मिनिट हमारे सेवा केन्द्र पर आओ और आकर योग सीखो जिससे शक्ति मिलेगी और इस महाविकार पर आप जीत पा सकोगे।" उसने स्वीकार किया।

मैंने क्लास में कहा कि जिन-जिन के अखबार वाले परिचित हों, उनको मिलकर इस दस सूत्री कार्यक्रम को अखबारों में डलवायें। एक भाई नेशनल हैराल्ड (National Herald) में कार्य करने वाले को सेवा केन्द्र पर लाया। जब उसको यह कार्यक्रम सुनाया गया तो वह कहने लगा कि यह तो बहुत ही

अच्छा कार्यक्रम है। आप हमें समाचार बनाकर दें, मैं ज़रूर अखबार में डलवाऊंगा। ऐसे प्रोग्राम को तो प्रथम पृष्ठ पर निकलवाना चाहिए। उसने आफ़िस में आने के लिए कहा। जब हम इस कार्यक्रम का समाचार बनाकर गये तो उसने सम्पादक महोदय से मिलवाया। उनसे इसी कार्यक्रम की चर्चा हुई। उन्होंने हमसे समाचार लिया और कहा कि यह अवश्य छपेगा।

एक 'कम्पोज़िंग एजेन्सी' का मालिक हमारे पास कार्य लेने हेतु आया। जब हमने उसे फ़ार्म भरने के लिए कहा तो उसने क्रोध, लोभ आदि ८ चीज़ों पर तो निशान लगा दिया परन्तु 'धूम्रपान' और 'काम' पर सही टिक लगाने से डरने लगा। वह कहने लगा "मैं वायदा नहीं करता। वायदा करने पर यदि मैं न चल सका तो···!" मैंने कहा "आप रोज़ १०-१५ मिनिट सेवाकेन्द्र पर आओ और योग सीखो तो इन पर जीत पा सकेंगे।" उसने रोज़ आने का वायदा किया।

इस प्रकार ऊपरलिखित उदाहरणों से स्पष्ट है कि हम कम-से-कम यह तो कर सकते हैं कि लोगों तक यह पहुंचा सकते हैं और उन्हें कह तो सकते हैं कि हमारा विश्व-विद्यालय क्या चाहता है, हमारा लक्ष्य क्या है, हमारी धारणायें क्या हैं? मैं एक बार फिर कह देना चाहता हूं कि यदि हम सब-ब्रह्मा बाबा की भुजायें एक साथ मिल उठें और दूसरे कार्यक्रमों को थोड़ा हल्का करके भाई-बहनों में उमंग उल्लास भरें तो अवश्य ही यह प्रयास कलियुग रूपी पर्वत को उलट देगा। कलियुग रूपी वृक्ष की जड़ पर यह अन्तिम कुल्हाड़ा होगा। और सन् '८१ में महायज्ञ से महाविनाश की ज्वाला निकल कर कलियुग को भस्मीभूत करना शुरू कर देगी।

गज़ल

श्यामाप्रसाद श्रीवास्तव 'श्याम'

मंज़िल की धुन में झूमते गाते चले गये।
दादा से अपने नेह लगाते चले गये॥
पर्दा-ए-काम, क्रोध हटाते चले गये।
बाबा का ज्ञान सब को सुनाते चले गये॥
दो दिन की ज़िन्दगी में क्या करे कोई अहम्।
हम राज योग सब को बताते चले गये॥
आज़ाद ज़िन्दगी है तो बर्बाद क्यों करूं।
बर्बादियों से मन को बचाते चले गये॥
इन्सानियत तो प्यार मुहब्बत का नाम है।
नगमा-ए-प्यार सबको सुनाते चले गये॥
मोसिल की ज़रुरत न मसाइल की दोस्तो!
मुरली से अपने दर्द मिटाते चले गये॥
कलयुग के अंधेरे में है सतयुग की रोशनी।
उस रोशनी की जोत जगाते चले गये॥
आख़िर बदलना हम को है इस देश का निज़ाम।
कलमा-ए-ज्ञान योग पढ़ाते चले गये॥
यह आत्मा तो रौशन है, इक नुक़्ता नूर का।
माया का पंजा इस से छुड़ाते चले गये॥
धारण किया है जब से मैंने रब गुणों का राज़।
पर्दा जो वहम का था, हटाते चले गये॥
लव (Love) में कोई लवलीन अगर हो गया है।
"श्याम"।
हम उस से अपना हाथ मिलाते चले गये॥

दृढ़ निश्चय

ब्र० कु० रविप्रकाश अग्रवाल विजयनगर राजस्थान

निश्चय में शक्ति है, साहस है, जो मन इन्द्रियों को काबू में रखता है। बिना निश्चय किया गया कोई भी कार्य सर्वदा संशय-युक्त व अपूर्ण ही रहता है और बाद में ऐसी स्थिति हो जाएगी कि बुद्धि कोई भी निर्णय नहीं ले पायेगी, क्योंकि निश्चय नहीं तो विवेक नहीं और फिर हमारी वाणी की सत्यता अधूरी रह जायेगी और हमारे विचार, निर्णय, कार्य करने की शक्ति पर स्वयं को संशकित होना लाजमी है, एसी संगम-युक्त स्थिति से मुक्ति का सफ़ल मार्ग है निश्चय ! और निश्चय यदि दृढ़ होगा तो उसे मन, संशय विपरीत परिस्थिति, साधनों की कमी, समय की प्रतिकूलता, अन्य बाधाएं कोई भी विचलित नहीं कर पायेगी व वह व्यक्ति आत्म-प्रेरणा को हठनिश्चय द्वारा आगे बढ़ जायेगा या उस कार्य को पूरा कर लेगा।

दृढ़ निश्चय वह आणविक शक्ति है जो प्रयोग होने पर आणविक विस्फोटक स्थिति की तरह आत्म विश्वास के शत्रु संशय-संदेह-भय को नष्ट कर देती है उसकी शक्ति का मूल्यांकन सहज नहीं है।

दृढ़ निश्चय संकल्पों की वह शक्ति है जो हमें साहस प्रदान करती है, व भय-संशय-आलस्य सभी से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ाकर अपने कार्य को पूरा करवाती है, दृढ़ संकल्पों से असम्भव भी सम्भव व कठिन कार्य सरल बन जाते हैं।

किसी कार्य के पूर्व में आत्मा विश्वास उत्पन्न करती है बुद्धि निर्णय करती है मगर मन उस बुद्धि के विवेक परिपूर्ण निर्णय को संशय युक्त या भय-युक्त कर देता है जिससे प्रगति की दिशा अवरुद्ध हो जाती है सभी स्थिति से निपटने का हथियार 'निश्चय' ही है और यदि आपका निश्चय दृढ़ होगा तो आप संकल्पों के सहारे मन व इन्द्रियों पर अधिकार करते हुए उत्साही-निर्भय-विवेकवान बन सकेंगे, आपको आत्मोक स्थिति प्रबल होगी व उसे हर परिस्थिति से निपटने का साहस स्वतः होगा जिससे आपका कार्य शीघ्र में पूरा होगा। **"दृढ़ निश्चयपूर्वक किये गये विचारों को कार्य रूप में परिणित होने से कोई नहीं रोक सकता है।"**

दृढ़ निश्चयी व्यक्ति संकल्पों के सहारे अपनी विपूल आत्मिक शक्ति को प्रत्यक्ष कर सकता है उसमें सोई अनेक आत्म शक्तियां जाग उठती हैं और वह प्रत्येक कार्य को उच्च साधना से करने से संक्षम हो सकता है। दृढ़ निश्चय के अभाव में कमजोर व्यक्ति प्रत्येक कार्य असम्भव मान लेते हैं व सफ़लता प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है—'सम्भव असम्भव से प्रश्न पूछता है तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है और असम्भव उत्तर देता है निर्बल के स्वप्न में क्योंकि असम्भव शब्द कायरों के कोष में रहता है।"

विकारों में अनिश्चयता से मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक जाता है, मानसिक अर्न्तद्वन्द उसके व्यक्तित्व को क्षीण-हीन कर देता है वह निर्णय ही नहीं कर पाता क्या करे क्या न करे वस्तुतः कुछ नहीं कर पाता फ्रांस के लेखक ने कहा है : People do rct lack strength they lack will" अर्थात साधारण लोगों में शक्ति का अभाव नहीं वस्तुतः संकल्प (निश्चय का अभाव होता है जिसके कारण वे कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाते।

महान पुरुषों की महत्ता के पीछे दृढ़ संकल्प शक्ति रही' मनुष्यों के लिए कुछ भी पाना दुर्लभ नहीं मगर उसके लिए दृढ़ निश्चयपूर्वक प्रयास करना चाहिए "संकल्प से आत्म-प्रेरणा का सीधा सम्बन्ध है आत्मा जो प्रेरणा करती है वह मिल सकती है बशर्ते दृढ़ निश्चय हो।"

हीन संकल्प पतन का व उच्च संकल्प मुक्ति-मार्ग को सरल बनाते हैं, रावण, दुर्योधन, कंस, हीन संकल्पों के कारण सम्पूर्ण कुल सहित विनाश को प्राप्त हुए तथा राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा आदि पुरुष श्रेष्ठ संकल्पों में दृढ़ निश्चय के कारण

युग-युगान्तर अमर हो गये।

जिस प्रकार कोयले को जलाने पर वह ताप देता है अर्थात् उसकी शक्ति का पता चलता है, उसी प्रकार मनःस्थिति को एकाग्रता में दृढ़-निश्चय शक्ति देता है, मगर ध्यान रहे उस पर अनिश्चय रूपी राख न आने पाये।

दृढ़ निश्चय वह चुम्बकीय शक्ति है जो सफलता रूपी लोहे को अपनी ओर आकर्षित करती है, जिस प्रकार जंग लगे लोहे को चुम्बक नहीं खिचता उसी तरह असफलताएं रुकावटें दृढ़ निश्चय के सामने नहीं ठहर सकती है।

लौकिक सन्दर्भ में यदि प्रत्येक कार्य दृढ़ निश्चय करके शुरू किये जाएँ तो सफलता रूपी मंजिल के मार्ग में चाहे कितने भी संकट व बाधाएँ क्यों ना हो वह राही अवश्य ही सफलता रूपी मंजिल पर पहुँच जायेगा !

इसी तरह यदि परमात्मा-मिलन का हमारा ध्येय, साधना व विचारों में दृढ़ निश्चय होगा तो निश्चित तौर पर मानिये कि परमात्मा मिलन होगा या उसका आभास अप्रत्यक्ष तौर पर ही इन्द्रियों को मिलेगा ऐसी शान्ति या आत्मिक आनन्द का अनुभव होगा जिसका वर्णन संभव नहीं जो विश्व में अन्यत्र किसी माध्यम द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता।

●

आदर्श जीवन बिताना

ब्र० कु० राजेन्द्र महतो (राँची)

चाहते हो आदर्श जीवन बिताना
करो दीव्य गुणों की धारणा॥
एक्टिव बन, अट्रेक्टिव बनो।
निःअहकारी बनो योगी बनो॥
अपना ढंग बनावो सादा।
तड़क-भड़क में पड़ो न ज्यादा॥
सात्विक भोजन ग्रहण करो।
त्यागमुर्त्त बनो योगी बनो॥
अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन।
सबसे सम्पति है मूल्यवान॥
मायाजीत बन विजयी बनो
विश्व सेवाधारी बनो योगी बनो॥
वानी से परे वानप्रस्थ की अवस्था है।
सभी को घर वापीस जाना है॥
छोड़ो पुरानी दुनिया की प्रलोभनो।
इस संगम युग पर प्रभु को जानो॥
पाँच विकारों की अग्नि से।
देखो दुनिया जली पड़ी है॥
इससे ममता क्या रखते हो।
प्रभु से सम्बन्ध जोड़ लो।
अगर पानी है स्वर्ण की बादशाही।
तो सदा रहो अती इन्द्रीय सुख में॥
साथी बना लो भगवान को।
मन में बसा लो भगवान को॥
आज के ऊँचे महलों से
दुर्गन्ध चरित्र हीनता की आती है
बाबा के श्रीमत पर चलो
कमल फूल समान पवित्र बनो
तेरी आत्माओं को तेरे गुरुओं ने
डुबो दीया है विषय सागर में
नेमी मत बनो नियम का पालन करो
यह बेहद का वाक्य सुनो
क्षीर सागर में ले चलने के लिए
माया के जंजीरों से छुड़ाने के लिए
ज्ञान के सागर पराये देश में आये हैं
उनकी अमृत वाणी सुनो, योगी बनो
चाहते हो आदर्श जीवन बिताना,
करो दीव्य गुणों की धारणा

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल,कमलानगर, दिल्ली

विभिन्न सेवाकेन्द्रों से ईश्वरीय सेवा के बहुत ही उत्साहवर्धक समाचार मिले हैं। इनका सारांश यहाँ उद्धृत है।

विद्यालय सेवा

कलकत्ता सेवा-केन्द्र की ओर से कंचन पाड़ा में स्थित प्रसिद्ध हरिसभा में एक सप्ताह के लिये राजयोग प्रदर्शनी एवं शिविर का आयोजन किया गया जिससे लगभग १०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के ७ विद्यालयों में आध्यात्मिक प्रोजैक्टर शो दिखाया गया जिसे अनेक विद्यार्थियों व शिक्षकों ने देखा और परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय प्राप्त किया।

रायपुर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की प्रसिद्ध चौबे कालोनी में दस दिनों के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन रविशंकर विश्व-विद्यालय के उप-कुलपति भ्राता कौशल प्रसाद चौबे ने किया। हजारों लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। स्थानीय समाचार पत्रों में भी इसका विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ।

ग्राम सेवा

पाटन में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न ग्रामोंमें आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों के कार्यक्रम हुए जिसके द्वारा अनेकानेक ग्रामवासियों ने लाभ उठाया। इनमें से ग्राम बिन्द्रोडा तथा गंगेट ग्राम का नाम उल्लेखनीय है। वहाँ सरपंच व सैकड़ों लोगों ने राजयोग शिविर में भी भाग लिया तथा अनेक नए भाई-बहन क्लास में आने लगे हैं।

जूनागढ़ सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के निकटवर्ती अनेक ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया जिससे हजारों ग्रामवासियों ने लाभ उठाया। इनमें से पानेलीमोटी ग्राम का नाम उल्लेखनीय है तथा वहाँ अब नियमित रूप से उप-सेवा केन्द्र चल रहा है।

जगन्नाथपुरी में स्थिति सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इनमें से चाँदपुर, छुईतना, गोपीनाथपुर सत्यवादी तथा साक्षी गोपाल आदि ग्रामों का नाम उल्लेखनीय है।

सोनोपत सेवा केन्द्र की ओर से आर्यनगर में आध्यात्मिक प्रवचनों गीतो एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया जिससे अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त लहराड़ा ग्राम में विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे लगभग १०००० लोगों ने लाभ उठाया।

समाचार मिला है कि मुरादाबाद, वांरगल एंव जलगाँव सेवा केन्द्रों की ओर से पिछले मास ग्राम सेवा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। निकटवर्ती अनेक ग्रामों में आध्यात्मिक प्रर्दशनी, प्रवचनों एवं राजयोग प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक ग्रामीण भाई-बहनों को परमात्मा का वास्तविक परिचय मिला

नये शहर में

सम्बलपुर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से राऊलकेला नामक शहर में राजयोग शिविर एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के विद्यालयोंमें ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिस से प्रधानाचार्य, शिक्षक एवं विद्यार्थी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अनुरोध किया कि सप्ताह में एक दिन अवश्य बहनों के प्रवचन होने चाहिए। इसके अतिरिक्त धनुपाली एवं वरगढ़ नामक स्थानों पर आयोजित राजयोग प्रदर्शनी एवं शिविरों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

चाँदनी चौक में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से विशिष्ठ व्यक्तियों को ईश्वरीय सन्देश देने की सेवा

की गई। इनमें से इंगलैंड के लार्डफैनर ब्रुकवे, ब्रिटिश हाईकमिश्नर तथा भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री भ्राता सी० सुब्राहमनियम का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त सनातन धर्म द्वारा राम नवमी पर आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' तथा ब्रह्मपुरी सोसायटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

सिकन्दराबाद सेवा केन्द्र की ओर से विशाखापटनम् में अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे लगभग १५००० आत्माओं ने लाभ उठाया तथा सैकड़ों लोगों ने राजयोग शिविर किया। इसके परिणाम स्वरूप लगभग ५० भाई बहन नियमित रूप से ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा ले रहे हैं। इस अवसर पर आयोजित 'प्रैस कान्फ्रेंस' भी बहुत सफल रही तथा स्थानीय समाचार पत्रों में प्रदर्शनी का विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ। वहाँ के रोटरी क्लब में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा अनेक स्कूलों एवं कालेजों में प्रवचन के लिए निमन्त्रण मिलते रहते हैं।

छपरा (पटना) में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से हाजीपुर में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिला सत्र न्यायधीश भ्राता चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह ने किया। इस अवसर पर आयोजित 'पत्रकार सम्मेलन' भी बड़ा सफल रहा जिसमें आर्यावृत्त आकाशवाणी, सर्चलाईट, आत्मकथा, हिन्दुस्तान समाचार, समाचार भारती के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लगभग ५००० लोगों ने प्रदर्शनी का लाभ उठाया तथा १५० लोगों ने राजयोग शिविर किया।

मेला प्रदर्शनी

दत्तियाना सेवा-केन्द्र की ओर से एक टीचरस-ट्रेनिंग कोर्स का आयोजन किया गया जिसमें लगभग २० कन्याओं ने भाग लिया। इन्हें ईश्वरीय ज्ञान एवं सन्देश जन-जन को पहुंचाने के कार्य में प्रवीण बनने तथा अपने जीवन को "आदर्श" बनाने की ट्रेनिंग दी गई।

पहाड़गंज सेवा केन्द्र की ओर से आसपास के विभिन्न क्षेत्रों में राजयोग प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिनमें से मैन बाजार, पहाड़गंज, महादेव रोड, मुलतानी ढांढा एवं चूना मण्डी का नाम उल्लेखनीय है। इन प्रदर्शनियों से अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

कमला नगर तथा **शक्तिनगर** में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से बैसाखी के अवसर पर "मजनू का टीला" पर एकत्रित भक्तों को ईश्वरीय संदेश देने हेतु आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त शक्तिनगर में ५ दिनों के लिए 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' लगाई गई जिससे अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा का परिचय दिया गया तथा योग शिविर कराया गया।

नई दिल्ली सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

ग्रीन पार्क में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से युसफसराय तथा नारोजी नगर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया।

नदियाद में मानव दिव्य आध्यात्मिक मेला का आयोजन किया गया जिससे लगभग २०,००० लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर शोभा यात्रा भा निकाली गई तथा राजयोग शिविर का आयोजन भी बड़ा ही सफल रहा।

तिरुपति में स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय को देखने कर्नाटक के मुख्य मन्त्री भ्राता गुंडुराव व अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे जिन्होंने इसको ईश्वरीय-सन्देश जन-जन तक पहुंचाने का बहुत ही श्रेष्ठसाधन बताया। वहाँ के ओरिन्टल कालेज में राजयोग फिल्म दिखाई गई जिससे अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के रोटरी क्लब में 'राजयोग फिल्म' एवं 'आनन्द फिल्म' द्वारा उपस्थित व्यक्तियों को वास्तविक आनन्द एवं शान्ति का सहज मार्ग दर्शाया गया।

भोपाल सेवा केन्द्र की ओर में वहाँ के चार विभिन्न स्थानों पर चार आध्यात्मिक मेलों तथा राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सुन्दर झाँकियों से सजी हुई विशाल शोभा यात्रा भी प्रमुख भागों से निकाली गई थी तथा सायंकाल आध्यात्मिक प्रवचनों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे जो कि सारे शहर के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। शहर के अनेक विशिष्ठ व्यक्तियों के अतिरिक्त लाखों लोगों ने इन मेलों एवं राजयोग शिविरों से लाभ उठाया तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। वहाँ के स्थानीय समाचार पत्रों ने भी मेले का विस्तृत समाचार प्रकाशित करके ईश्वरीय सन्देश जन-जन तक पहुंचाने में सहयोग दिया। इनमें से "दैनिक भास्कर", "नवभारत", "हितवाद" तथा "एम० पी० क्रानिवल" का नाम उल्लेखनीय है।

जोधपुर के व्यापारियों द्वारा आयोजित एक विशाल 'उद्योग मेले' में वहाँ के सेवा केन्द्र की ओर से एक पण्डाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

कानपुर (नयागंज) सेवा केन्द्र की ओर से ग्राम मझिया में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर में भी अनेक आत्माओं ने भाग लिया और सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव किया।

गोरखपुर सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो काआ योजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया।

जालन्धर सेवा केन्द्र की ओर से नूरमहल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

ऊँझा के प्रसिद्ध स्थान पर १० दिनों के लिए 'नव-विश्वनिर्माण आध्यात्मिक मेला' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन अहमदाबाद के प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता लक्ष्मीकन्त मनुभाई सेठ ने किया। इस मेले को हजारों लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। एक विशाल शोभा यात्रा एवं झाँकियों का कार्यक्रम भी हुआ तथा वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों का स्नेह मिलन का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। स्थानीय समाचार पत्रों ने मेले का विस्तृत समाचार प्रकाशित करके जन-जन को ईश्वरीय सन्देश पहुंचाने में सहयोग दिया जिनमें से जन सत्ता, गुजरात समाचार, संदेश, प्रभात, देवदत्त, महा-गुजरात, प्रगति आदि का नाम उल्लेखनीय है।

गोहाटी में स्थित सेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में वहाँ के प्रसिद्ध स्थान पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

बांगल कोट सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देशदेने हेतु आध्यात्मिक प्रवचनों व प्रौजैक्टर शो का कार्यक्रम हुआ जो बहुत सफल रहा।

भावनगर सेवाकेन्द्र की ओर से इन्जीनीयर्स के लिये विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें अनेक लोगो ने भाग लिया इसके अतिरिक्त सुभाष नगर, सरदार नगर, महिला बाग, खोडियार, रसाला कैम्प, निर्मल नगर आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जो बहुत ही सफलरहा।

मेरठ सेवा-केन्द्र की ओर से मवाना में राजयोग प्रर्दशनी एवं शिविर का आयोजन किया गया जिससे सभी वर्ग के लोगों ने लाभ उठाया।

भुवनेश्वर में उडीसा सरकार द्वारा लगाई गई 'हैण्डलूम प्रदर्शनी' में एक विशाल पण्डाल में आध्यात्मिक प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु सराहरपुर में नव-विश्व आध्यात्मिक मेला" एंव योग-शिविरों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित प्रैसकान्फ्रेस बडी ही सफल रही जिसके परिणाम स्वरुप 'इण्डियन एक्सप्रैस" "हिन्दुस्तान" 'पंजाब केसरी' 'वीर प्रताप' 'मिलाप' 'हिन्द समाचार' आदि समाचार प्रकाशित हुए हैं। लगभग २५००० लोगों ने इस मेले को देखा और "योगी तथा पवित्र" बनने का ईश्वरीय सन्देश लिया।

नीमच में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से चितौड़गढ के राजकीय कन्या विद्यालय के प्रांगण में 'दिव्य

जीवन निर्माण सम्मेलन' का आयौजन किया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया इसके अतिरिक्त वहाँ की 'मुस्लिम यंग स्टार सोसायटी 'द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए। वहाँ के अनेक स्कूलों में भी बहनों के प्रवचन हुए जिससे अनेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

बाराबंकी, सांपला एंव जोगीनगर में स्थित सेवा केन्द्रों द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रर्दशनो एंव प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे सभीवर्ग से हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

उज्जैन में मनाये गये सिंघस्थ कुम्भ पर्व के अवसर पर एकत्रित लाखों लोगों को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु इन्दौर जोन के सेवा-केन्द्रों की ओर से एक विशाल पण्डाल में 'विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक मेला', राजयोग शिविर एवं आध्यात्मिक सम्मेलनों" का आयोजन किया गया। यह मेला क्षिप्रा नदी के पास रामबाग में दत्त अखाड़ा क्षेत्र में लगभग ५ सप्ताह के लिये लगाया गया। जिसमें 'सिंहवाहिनी दुर्गा माँ' तथा अमृतकलश के माडल एंव चित्र जनता को बहुत ही आकर्षित करते रहे। इस मेले को विभिन्न शहरों व ग्रमों से आये हुए लाखों तीर्थ यात्रियों साधु-महात्माओं, सरकारी अधिकारियों, व प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने देखा तथा ज्ञानामृत धारण करके 'पवित्र और योगी बनने" का ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। इससे पूर्व उज्जैन शहर के प्रमुख भागों से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका मेला अधिकारियों एवं शहर वासियों ने पुष्प वर्षा करके स्वागत किया। सारे शहर में हजारों की संख्या में सड़क के दोनों ओर जनता खड़ी हुई एक विशाल शोभा यात्रा' को देखकर हर्षित हो रही थी। इस अवसर पर आयोजित "प्रैस सम्मेलन" में भी स्थानीय समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और बहुत ही प्रभावित होकर गये। सभी समाचार पत्रों ने मेला एवं आध्यात्मिक सम्मेलनों का विस्तृत समाचार प्रकाशित किया है। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर की विशेषता यह रही कि आम जनता व तीर्थयात्रियों के अतिरिक्त अनेक साधुओं सन्तों ने भी योग शिविर किया और अपने में पहली बार सच्ची-शान्ति का अनुभव किया।

उपसेवाकेन्द्र मेला

चौमुहा उपसेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया तथा परिणामस्वरूप चन्दपा तथा सेनवा ग्राम में उप सेवा केन्द्र खुल गये हैं।

बिलासपुर में स्थित उप-सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रसिद्ध स्थान पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

मन्दिर सेवा

हैदराबाद सेवा केन्द्रकी और से प्रभु-भक्तों को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वहाँ के विभिन्न मन्दिरों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ। साथ ही वहाँ के अनेक कालेजों, स्कूलों एवं ग्रामों में आयोजित आध्यात्मिक प्रवचनों के कायक्रम भी बड़े सफल रहे। मैसूर के प्रसिद्ध स्वामी गणपति सच्चिदानन्द को भो वहाँ के संग्रहालय को देखने के लिए आमन्त्रित किया गया था जो बहुत हो प्रभावित होकर गया।

जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु निकटवर्ती ग्राम पुलगाँव, एडनेर व कांरेजा में वर्धा सेवा केन्द्र को ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त वर्धा के प्रसिद्ध "तुलजा भवानी" मन्दिर देवस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए।

अयोध्या के दिगम्बर जैन मन्दिर के प्रांगण में वाराणसी सेवा केन्द्र की ओर से विश्व नव-निर्माण प्रर्दशनी का आयोजन किया जिसे लाखो श्री राम के भक्तों ने देखा तथा परमात्मा का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त कनोडिया केमिकल्स, रैनकूट, पिपरी तथा चुर्क व ओबरा में भी राजयोग फिल्म दिखाई गई जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

रांची सेवा-केन्द्र की ओर से रामनवमी महोत्सव, आध्यात्मिक प्रर्दशनी एवं प्रवचनों के रुप में बड़ी धूमधाम से मनाया। वहाँ के

अशोक नगर के कम्यूनिटी हाल तथा कालका बस स्टैण्ड के सामने महावीर मन्दिर मे आयोजित ये प्रर्दशिनियाँ बहुत सफल रही जिसमें अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

कानपुर (किदवई नगर) सेवा-केन्द्र की ओर से बारह देवी मन्दिर के प्रांगण में 'आध्यात्मिक लघु मेला' का आयोजन किया गया जिसमें सिंह वाहिनी 'दुर्गा माँ'का मण्डप सभी को आकर्षण करता था। हजारोंलोगों ने शिक्षाप्रद झाकियां, चित्रों एंव मॉडल्स को देखकर पवित्र बनने की प्रेरणा ली

मेरे खुदा—शिव बाबा

राजू-पथिक

एक साधारण से तन में
वृद्ध आदम बन कर,
आते हैं खुदा हमारे
रूहों के साजन बनकर।

जब पाक जहाँ हमारा
शैतानियत से दोजख बन जाता,
तब खुदा दोस्त हमारा
रूहानियत से जन्नत बना जाता।

जब-जब जहाँ हमारा
जहन्नुम से गुजरा है,
निज ताज तख्त खोकर
गुम-सुम राहों पे बैठा है
खाकर तरस खुदा ने
किस्मत का गेट खोला है।

है यही सभा के परवाने
आकर मिलन मना ले
खुदा की खुदाई-नसीहत कर ले
जन्नत की राजाई वसीयत बनाले।

कयामत भी देखो आ ही गया
खुदा से अपना कुसूर कह दे,
बुद्धि का विकाश कर ले
ज्ञान का इजाद कर ले
जमाने को चुटकी में
बदल के साफ कर दे।

देखो नबी है ये आदम तुम्हारा
जिसे तुमने था मस्जिदों में पुकारा
यही है कि अल्ला यही है वो अकबर
यही तेरा अब्बा यही है वो दिलवर

तो दिलवर से अपना— तू खुतवा पढ़ा ले
मुहब्बत में उनके—दिल को फरिश्ता बना ले
यही है वो रिस्ता, यही है वो नाता, यही
रास्ता है इसे अपना ले।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

ऊपर के चित्र में उज्जैन के कुम्भ (सिंहस्थ) पर्व के अवसर पर आयोजित 'आध्यात्मिक मेला' के उद्घाटन के लिये पधारी हुई मुख्य प्रशासिका आदरणीया दादीजी का स्वागत वहां के महापौर भ्राता राधेश्याम उपाध्याय कर रहे हैं।

इस चित्र में लेबरपार्टी (लण्डन) के ख्याति प्राप्त नेता लार्ड ब्रोंकवे तथा उनकी सुपुत्री को ईश्वरीय सन्देश एवं साहित्य देने के पश्चात् चांदनी चौक (दिल्ली) के भ्राता जयप्रकाश वकील उनके साथ खड़े हैं।

—उज्जैन में कुम्भ पर्व (सिंहस्थ) के अवसर पर 'आध्यात्मिक मेला' का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर शहर के प्रमुख भागों से निकाली गई विशाल शोभा यात्रा एवं झाकियों का एक दृश्य है। मुख्य प्रशासिका दादी जी खुली कार में बैठी हैं उनके साथ ब्र० कु० मोहिनी एवं आरती बहन बैठी हैं।

नीचे के चित्र में राधास्वामी सत्संग (व्यास) के गुरु चरन-जीतसिंह जी के इन्दौर संग्रहालय में पधारने पर ब्र० कु० किरण उन्हें कल्पवृक्ष के चित्र की व्याख्या सुना रही हैं।

← इस चित्र में भोपाल में आयोजित 'आध्यात्मिक मेला' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाश मणी जी एवं पोस्ट मास्टर जनरल की धर्मपत्नी बहन सुशीला जी बैठी हैं।

सूरत सेवा-केन्द्र द्वारा वारडोली ग्राम में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के सिविल जज भ्राता भूपेन्द्र जी मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं। साथ में साइन्स कालेज के प्रधानाचार्य भ्राता बालु भाई पटेल व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

पाली के निकट इन्द्रवाड़ा ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० राज वहाँ के कलेक्टर तथा जन-सम्पर्क अधिकारी को दे रही हैं।

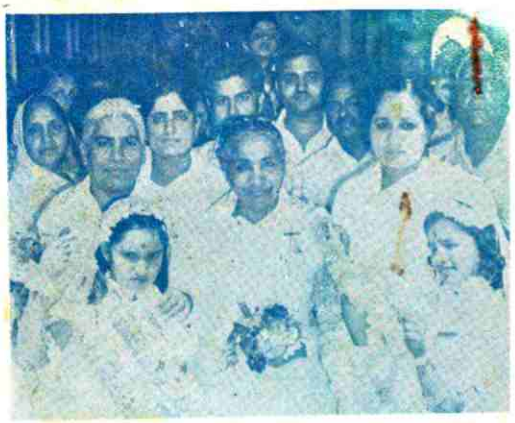

फिरोजपुर सीटी के "चरित्र-निर्माण संग्रहालय" में मुख्य सह-प्रशासिका दीदी मनमोहिनी जी पधारी थीं। उनके साथ ब्र० कु० तृप्ता, सरमिन्टा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में आई० पी० सी० एल० के जनरल मैनेजर प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० सरला, गीता एवं गोविंद भाई बैठे हैं।

—यह चित्र सहारनपुर में आयोजित विश्व-आध्यात्मिक मेला तथा रजत-जयन्ती समारोह के अवसर का है। मंच पर ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा, मुख्य-सह-प्रशासिका दीदी मनमोहिनी जी, भ्राता राम नारायण (पद्मविभूषित) ब्र० कु० चन्द्रमणी प्रकाश इन्द्रा तथा ब्र० कु० ब्रजमोहन बैठे हैं।

—यह चित्र काँचरापाड़ा की हरिसभा राधेकृष्ण मन्दिर में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन का है। टेक्नीकल कॉलेज के प्रिंसीपल दीपक जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

Regd No D (D) 178